चन्दामामा
फरवरी १९८१
Rs 50

जीवन, तुम्हारे साथ यात्रा करना मुझे बहुत अच्छा लगता है। तुम्हारे हाथ से केले खाना भी पसन्द है और तुम्हारे कंधों पर सोने में भी मज़ा आता है। अक्सर सोचता हूं तुम न होंगे तो मेरा क्या होगा?

तुम्हें तो मदारी के पास हमेशा काम मिल सकता है। जीने के लिये नाचो और करतब दिखाते रहो।

तब तो भई, मैं मर ही जाऊंगा। पर क्या दूसरा कोई रास्ता नहीं है?

हां, है। तुम्हारे भविष्य के लिये एक सबसे विश्वसनीय और अचूक रास्ता है। इसे जीवन बीमा कहते हैं।

यह अभी से ही धन बचाने का एक रास्ता है, ताकि पैसे की सख्त जरूरत पड़ने पर तुम्हें अच्छी खासी रकम मिल सके। सबसे पहले, हम इस बात के लिये राज़ी हो जाते हैं कि एक निश्चित रकम जीवन बीमा निगम के पास नियम से जमा कराते रहेंगे। वे उस रकम को बचाकर उसका प्रयोग हमारे लिये और धन कमाने के लिये करते हैं। इसको पूंजी निवेश कहते हैं।

पर धन को क्या हम स्वयं नहीं लगा सकते हैं?

अन्तर यह है कि यदि किसी भी समय, मान लो कल ही, या अगले सप्ताह ही सही, मुझे कुछ हो गया तो निगम तुम्हें एक अच्छी खासी रकम दे देगा। इससे तुम अपना काम अच्छी तरह चला सकते हो।

क्या तुम्हारा मतलब है कि जितना हम जमा करेंगे उससे भी ज़्यादा वो मुझे देंगे?

बहुत, बहुत ज़्यादा। धन लगाने के अन्य साधनों की तरह नहीं। और यदि मुझे कुछ नहीं भी हुआ तो कुछ निश्चित वर्षों बाद हमने जितना जमा किया है वह सब वापस मिल जायेगा। साथ ही, इससे जो रकम उन्होंने कमाई है वह भी हमें मिल जायेगी।

LIC

भविष्य की सुरक्षा के लिये मानव ने कितना बढ़िया उपाय ढूंढ़ा है।

जीवन बीमा के बारे में और जानकार हो जाइये।

हमारी मुफ्त रंगीन पुस्तिका (जीवन-हनु के 6 आकर्षक स्टिकरों सहित) के लिये लिखें: जीवन और हनु, मारफत पी आर एण्ड पब्लिसिटी विभाग, जीवन बीमा निगम, केन्द्रीय कार्यालय, पो.बा.नं. 252, बम्बई 400 021। कृपया यह भी लिखें कि पुस्तिका आपको हिन्दी में चाहिये या अंग्रेजी में।

भारतीय
जीवन बीमा निगम

आनंद की आकांक्षा - विमान उड़ाना

आज ही केवल 10 रुपये से अपने बच्चे के लिए एक खाता खोलिए। 12 साल का हो जाने पर वह अपना खाता खुद संचालित कर सकता है। बचत पर 5% ब्याज भी मिलता है। देखिए तो वह और उसकी बचत कैसे बढ़ती है।

माइनर्स सेविंग अकाउंट

नाबालिग बचत खाता

सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया

(भारत सरकार का उपक्रम)

यही वह बैंक है जो हर जगह
हर मनुष्य की सहायता देने में तत्पर है

Interpub/CBI/6/80 Hin

"डाक्टर
मेरी गुड़िया बेबी बीमार है।
ज़रा देखिए,
क्या हुआ है?"

"बुखार-वुखार
कुछ नहीं है।
बस ज़रा पेट में दर्द है।
इसे वुडवर्ड्स
ग्राइप वाटर दे दो।"

"डाक्टर,
इस बारिश की
मौसम में भी
ग्राइप वाटर
दे सकते हैं?"

"बारिश हो या धूप या सर्दी—
हर मौसम में बच्चों के
आम स्वास्थ्य के लिए
वुडवर्ड्स ग्राइप वाटर
दे सकते हैं।"

IMPORTANT TO MOTHERS
WOODWARD'S CELEBRATED
"GRIPE WATER"
SHAKE THE BOTTLE BEFORE OPENING

IMPORTANT TO MOTHERS
WOODWARD'S CELEBRATED
"GRIPE WATER"
SHAKE THE BOTTLE BEFORE OPENING

१०० से भी ज़्यादा सालों
से हर माँ की पहली पसंद

वुडवर्ड्स ग्राइप वाटर

CAS/OPPL/3/80 HIN

हम फूलों से प्यार करते हैं. छोटे-छोटे
गुलाबी फूल और हरी-हरी पत्तियाँ
कितनी प्यारी-प्यारी लगती हैं!

कोई ताज्जुब की बात नहीं की हम
फ्लोरा पेन्सिलों से भी प्यार करते हैं.
मेरी मम्मी ने मुझे जन्म-दिन पर
फ्लोरा पेन्सिलों का एक डिब्बा दिया.

सभी को पेन्सिलें पसन्द आईं.
शाम होने तक एक छोड़कर सभी
पेन्सिलें गायब हो गईं. खैर! कोई बात
नहीं. आखिर वो सब हमारे
दोस्त ही तो थे न!

फ्लोरा पेन्सिलें इतनी सुन्दर होती हैं.

कॅम्लिन
फ्लोरा
पेन्सिलें
कैमल आर्ट मटिरियल्स
बनानेवालों की देन

कॅम्लिन प्रायव्हेट लि.
आर्ट मटीरियल डिविजन,
बम्बई-४०० ०९९.

VISION 793 HIN

Results of Chandamama—Camlin Colouring Contest No. 17 (Hindi)

1st Prize: Farah Naaz Farooqui, Hyderabad. *2nd Prize:* Himanshugaur, Mainpuri. *3rd Prize:* Bohari Burhanuddin Taiyabali, Satama. *Consolation Prizes:* Ravi Goyal, Ujjain-456001; Chitra Das, Bangalore-6; Satish Chand, New Delhi-49; Mukesh Kumar Hardyal Sham, Ahmedabad-16; Sunil Nagpal, Bombay-22.

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने की बेताल कथा "दुश्मनी का प्यार" है।

"एक ही बार!" नामक कहानी के द्वारा हमें यह विदित होता है कि माता-पिता के ज्यादा लाड़-प्यार करने से बच्चे किस तरह बिगड़ जाते हैं और उन्हें रास्ते पर लाना कैसे मुश्किल हो जाता है?

अमर वाणी

त्याग एको गुणः श्लाघ्यः, किमन्यैर्गुणराशिभिः,
त्यागाज्जगति पूज्यंते, पशु पाषाण पादपाः।

[चाहे और जितने भी अच्छे गुण क्यों न हो, उनमें से सिर्फ़ त्याग गुण ही प्रशंसनीय होता है। दूसरों का उपकार करने की वजह से ही पशु, फल वृक्ष और पत्थर भी आदर के पात्र बन जाते हैं।]

वर्ष : ३३ फ़रवरी १९८१ अंक : ६

एक प्रति : १-५० :: वार्षिक चन्दा : १८-००

श्रीकंठं माधवराव, नेल्लूर

प्र. विश्वास और विज्ञान के बीच का संबंध समझा दीजिए। किन किन संदर्भों में विश्वास विज्ञान को पार कर जाता है?

मनुष्य चाहे किसी भी कार्य का संकल्प करे, उसके पीछे अपना एक विश्वास होता है। सवेरे से लेकर मनुष्य की जरूरतें शुरू हो जाती हैं। नींद से जागते ही दूध चाहिए, साग-सब्जी चाहिए, दूकान से नमक, मिर्च, तेल, चावल, दाल ख़रीदना है, बीमार पड़ने पर डॉक्टर चाहिए, बच्चों की पढ़ाई की अच्छी व्यवस्था करनी है। हम लोग यह विचार करके अपनी ज़िंदगी बिताते हैं कि दूध और तेल में मिलावट न होगी। चावल में कंकड़ न होंगे, डाक्टर सही ढंग से निदान करेंगे और नकली दवाएँ न होंगी। पर हमारे ये विश्वास हमेशा सच नहीं होते। रुपये देकर जो घी ख़रीदते हैं, दूसरे दिन ही उसमें से बदबू निकलने लगती है, स्कूल में कभी कभी बच्चों की पढ़ाई अच्छी नहीं होती। ऐसी हालत में हम कई लोगों के अनुभव प्राप्त कर किस दूकान में अच्छी चीज़ें मिलती हैं, कौन-सा डाक्टर जल्द हमें चंगा कर सकते हैं, किस स्कूल में बच्चों को अच्छी शिक्षा मिल सकती है, इनका पता लगाकर अनेक लोगों के विश्वासों को अमल में लाने का प्रयत्न करते हैं। अपने व्यक्तिगत विश्वासों की अपेक्षा समष्टि के विश्वास ज्यादा उपयोगी सिद्ध होते हैं।

इस प्रकार जो विश्वास कई बार सच्चे साबित होते हैं, वे ही विज्ञान की सीमा में आ जाते हैं। कई बार अगर यह साबित होता है कि अमुक पदार्थ में पोषक तत्व ज्यादा है, वे स्वास्थ्य के लिए उपयोगी हैं, तब वे विज्ञान के अन्दर आ जाते हैं। इसी प्रकार कुछ प्रकार की बीमारियों के लिए अमुक प्रकार की दवाइयों का सेवन अनिवार्य हो जाता है। अमुक फ़सल के लिए अमुक रासायनिक दवाइयों को उपयोग में लाना चाहिए। इस तरह समय के साथ अनुभव बढ़ता है। इसके साथ हमारे विश्वास भी विज्ञान के रूप में बदल जाते हैं। अंध. विश्वासों की जगह विज्ञान का प्रवेश करना ही प्रगति है। विज्ञान के विरुद्ध विश्वास रखनेवालों को हम मूर्ख मानते हैं। लेकिन मानव की आवश्यकताओं के अनुरूप विज्ञान प्राप्त नहीं होता, तब मानव केवल विश्वासों का अवलंबन करते हैं। देश का सारा हित निर्भर करनेवाले चुनावों में कोई भी विज्ञान काम नहीं दे पा रहा है, इसलिए हमें विश्वासों का अनुसरण करना पड़ रहा है।

पवित्र जल

गोपालपुर का जमीन्दार रत्नभूषण एक बार अपने खेतों का निरीक्षण करने गया। उसके खेत रामसहाय नामक एक किसान जोतता था। उन खेतों में पैदा होनेवाली पैदावर रामसहाय के घर में ही सुरक्षित रखी जाती थी।

रामसहाय के घर के पड़ोस में ही जमीन्दार ठहरा करता था।, इसलिए रामसहाय की बेटी शांता ने जमीन्दार के खाने का इंतजाम किया। शांता को देख जमीन्दार विस्मय में आ गया। शांता बड़ी सुंदर युवती थी और अविवाहिता थी। जमीन्दार के मन में शांता के साथ शादी करने की इच्छा पैदा हुई। यह बात उसने रामसहाय को बताई।

रामसहाय जमीन्दार की इच्छा जानकर अचरज में आ गया। क्योंकि जमीन्दार शादी-शुदा था और उसके दो बच्चे भी थे।

रामसहाय ने पूछा-"जमीन्दार साहब, आप की बातें मैं समझ नहीं पाता हूँ!"

"इसमें न समझने की कौन बड़ी बात है? मैं शांता को अपनी दूसरी पत्नी बनाना चाहता हूँ।" जमीन्दार ने कहा।

"आप ने मुझे गरीब समझकर ये बातें कहीं, लेकिन यह मुनासिब नहीं है। मेहर्बानी करके फिर कभी ऐसा न कहियेगा!" रामसहाय ने रोष में आकर कहा। इस पर जमीन्दार के अहंकार पर चोट लगी। वह सोचने लगा कि उसके साथ दूसरी पत्नी के रूप में अपनी कन्या को ब्याहने के लिए कोई भी इनकार नहीं कर सकता। रामसहाय घमण्डी हो गया है।

यों सोचकर उसने एक दिन मौका पाकर शांता को ही अपनी इच्छा बताई। शांता एकदम घबड़ा गई। रत्नभूषण

केदार नाथ

शांता का हाथ पकड़ने जा रहा था, तभी 'शांता! पुकारते एक युवक वहाँ पर आ पहुँचा।

"माधव, तुम कब आये?" शांता ने पूछा।

रत्नभूषण प्रश्नार्थक दृष्टि से शांता की ओर देखने लगा। तब शांता ने ही समझाया–"ये तो हमारे रिश्तेदार हैं! इनका नाम माधव है। शहर में कालेज में पढ़ते हैं! लेकिन ये भी इसी गाँव के हैं!"

इसके बाद रत्नभूषण माधव की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखते चला गया।

दर असल माधव के साथ शांता का विवाह करने की बात इसके पहले ही तै हो चुकी थी। माधव के चाल-चलन पर मुग्ध हो रामसहाय ने उसके साथ अपनी कन्या का विवाह करने का पहले ही निश्चय कर लिया था।

उस दिन शाम को रत्नभूषण मौक़ा पाकर फिर एक बार शांता से मिला और उसके साथ शादी करने पर ज़ोर दिया। मगर शांता उससे बचकर भाग गई। रत्नभूषण का क्रोध भड़क उठा। वह दिये पर लात मारकर शांता के घर से बाहर चला गया। दिये का तेल छलक गया और घर में आग लग गई। अड़ोस-पड़ोस के लोगों ने आकर आग बुझाई।

इस दुर्घटना का समाचार शांता ने रामसहाय और माधव को सुनाया।

उधर रत्नभूषण ने गाँव की पंचायत बुलवाई। रत्नभूषण के घर में उसकी पैदावर के जल जाने का अभियोग लगाया।

पंचों ने आश्चर्य में आकर समझाया– "जमीन्दार साहब, आप की पैदावर के साथ रामसहाय का घर भी जल चुका है न? आप रामसहाय से अपनी पैदावर माँगे तो बेचारा वह कहाँ से लायेगा? इसलिए अच्छा यह होगा कि अपना अभियोग आप वापस ले लीजिए।"

"मैं अपनी पैदावर को कैसे छोड़ सकता हूं? मेरी पैदावर को मुझे सौंपने की जिम्मेदारी रामसहाय पर है न?" रत्नभूषण ने उल्टा सवाल किया!

पंचों ने लाचार होकर रामसहाय को बुला भेजा। रामसहाय ने पंचायत में जाते हुए शांता का हाथ माधव के हाथ में रखकर समझाया-"बेटा, शांता को पाने के लिए ही रत्नभूषण ने यह चाल चली है! मेरी कुछ भी हानि हो जाय, मुझे चिंता नहीं है! शांता की रक्षा की जिम्मेदारी तुम्हारी ही है!"

"ससुरजी, आप पंचायत में चलिये! हम भी आप के पीछे आ जाते हैं।" माधव ने अपना निर्णय सुनाया।

"नहीं बेटा, जिस लकड़ी में आग होगी, वही लकड़ी जल जाती है।" यों समझाकर रामसहाय चल पड़ा।

रामसहाय की बातों ने माधव के दिमाग में कोई विचार पैदा किया। वह कालेज में रसायन शास्त्र का विद्यार्थी है। उसे यह उपाय सूझा कि एक रसायन प्रयोग के द्वारा जमीन्दार से रामसहाय को बचाया जा सकता है। उसी वक्त उसने अपने प्रयोग के लिए आवश्यक उपकरण तैयार किये और शांता को साथ लेकर पंचायत में पहुंचा।

रत्नभूषण पंचों को समझा रहा था- "अगर रामसहाय अपनी कन्या का विवाह उसके साथ करने को तैयार हो, तो वह अपना अभियोग वापस लेने को तैयार है।"

माधव ने पंचों को प्रणाम करके विनती की-"पंचो, आप लोग कृपया एक बार शांता की बातें भी सुनने का कष्ट कीजिए!"

शांता ने आदि से लेकर अंत तक सारी बातें कह सुनाईं। लेकिन रत्नभूषण ने शांता की बातों को झूठ बताया। उल्टे उसने यह आरोप लगाया-"पैदावर को कहीं छिपाकर उसके जल जाने का बहाना करने के लिए रामसहाय या शांता ने घर में आग लगा दी होगी!"

पर माधव ने पंचों को समझाया– "पंचो, इस प्रकार सचाई का पता न चलेगा! हम लोग इस अपराध का निर्णय करने का भार ईश्वर पर छोड़ देंगे! हम जमीन्दार साहब, रामसहाय और शांता– इन तीनों के नाम तीन कागज के टुकड़ों पर लिखेंगे और उन पर भगवान के अभिषेक किया हुआ जल छिड़क देंगे, तब अपराध करनेवाले का नाम प्रकट हो सकता है!"

उनमें से किसी का इस बात पर विश्वास न था कि इस प्रयोग के द्वारा अपराध साबित होगा, फिर भी यह प्रयोग करने में किसी को भी कोई आपत्ति न थी! इस प्रकार अपराध कभी साबित न होगा, इस विश्वास के बल पर ही जमीन्दार ने माधव का जोरदार शब्दों में समर्थन किया।

माधव मंदिर में जाकर अभिषेक किया हुआ जल ले आया। इसके बाद उसने तीन कागज के टुकड़ों पर तीनों के नाम लिखे। सरपंच ने तीनों कागज के टुकड़ों पर अभिषेक का जल छिड़काया। आश्चर्य की बात थी कि जमीन्दार रत्नभूषण का कागज ही धधककर जल उठा।

इस पर सब ने हाहाकार किये। रत्नभूषण ने घबराकर अपनी गलती मान ली। पंचों ने उसके द्वारा रामसहाय को हर्जाना दिलवाया। रामसहाय ने उस धन से माधव और शांता की शादी कर दी।

इसके बाद शांता ने अपने पति माधव से पूछा–"माधव, जमीन्दार के नामवाला कागज कैसे जल उठा? तुमने कौन-सा प्रयोग किया?"

"चीनी और सज्जीखार (पोटाश) मिलाकर उसे एक कागज पर लेप किया और उस पर जमीन्दार का नाम लिख दिया। अभिषेकवाले जल में गंधक आम्ल को मिलाया। उस आम्ल के कागज पर लगते ही वह जल गया। बाक़ी दोनों कागज साधारण हैं, इसलिए वे जले नहीं।" माधव ने कहा।

[९]

[चतुर्नेत्र तथा समरसेन जब बातचीत कर रहे थे, तब काला उल्लू और नर वानर ने झाड़ियों के पीछे रहकर उनकी बातों को सुननेवाले जंगली मनुष्यों का पीछा किया। समरसेन ने चतुर्नेत्र से धन से लदी नाव और उसका पहरा देनेवाली नाग कन्या का वृत्तांत पूछा। चतुर्नेत्र ने उसे शाक्तेय तथा चण्डी देवी का समाचार सुनाया। बाद...]

शमन द्वीप के राजा शाक्तेय के बारे में चतुर्नेत्र के मुँह से सारा समाचार जानकर समरसेन अचरज में आ गया। उसे यह बात विचित्र सी लगी कि चन्डी देवी ने अपने लिए मंदिर का निर्माण मिट्टी और पत्थरों से न बनवाकर सोना व चांदी से बनाने का आदेश दिया है।

मंदिर का निर्माण चान्दी व सोने से करवाना मानव मात्र के लिए संभव नहीं है न? इस विचार के आते ही समरसेन ने पूछा—"चतुर्नेत्र! मुझे यह बात आश्चर्य जनक लगती है कि चन्डी देवी ने ऐसे असंभव कार्य को संभव बनाने का अपने भक्त को क्यों आदेश दिया है।"

चतुर्नेत्र सिर हिलाकर ठहाके के साथ हँस पड़ा, तब बोला—"समरसेन, तुम शायद शक्ति की उपासना के बारे में थोड़ी-सी भी जानकारी नहीं रखते! जो

लोग भौतिक सुखों की कामना करते हैं और मानव समाज पर अधिकार करने की इच्छा रखते हैं, वे ही लोग इस प्रकार शक्ति के उपासक बन जाते हैं। देवी ऐसे लोगों पर अनुग्रह करने के पहले उनके साहस और भक्ति की भी परीक्षा लेती हैं। हमारे राजा शाक्तेय की भी चण्डी देवी ऐसी ही परीक्षा ले रही हैं।"

"तब तो क्या शाक्तेय इतना सारा सोना व चांदी प्राप्त कर सकते हैं?" समरसेन ने पूछा।

"यही अद्‌भुत कथा मैं तुम्हें सुनाने जा रहा हूँ। धन से लदी नाव और उसका पहरा देनेवाली नाग कन्या का सारा वृत्तांत इसी में भरा हुआ है। मैं और एकाक्षी मांत्रिक जानी दुश्मन क्यों बने? इसकी भी कहानी सुनाता हूँ। इन सब का असली कारण–शमन द्वीप की चन्डी देवी की कामना–उसकी पूर्ति करने का बचन देनेवाले शाक्तेय है।" इन शब्दों के साथ चतुर्नेत्र वह कहानी सुनाने लगा :

"शाक्तेय ने देवी की इच्छा की पूर्ति करने का निश्चय किया। एक प्रकार से उसे इच्छा कहने के बजाय आज्ञा बताना ज्यादा मुनासिब होगा। शाक्तेय को अगर इतना सारा सोना-चांदी प्राप्त करना है तो उन्हें भी तुम लोगों जैसे दूसरे राज्यों पर हमला करने के अलावा दूसरा रास्ता नहीं है न?

शाक्तेय सैनिकों का संगठन करने के लिए देश के कोने-कोने को छानने लगे। बलवान और साहसी युवकों को चुन-चुनकर अपनी सेना में भर्ती करने लगे। हर एक गाँव में जाकर वहाँ के युवकों को इकट्ठा करते, उन्हें द्वन्द्व युद्ध, तलवार व लाठी चलाना आदि स्पर्धाएँ चलाते थे। ऐसी स्पर्धाओं में जीतनेवाले थोड़े से युवकों को ही वे सैनिक दल में ले लेते थे।

शाक्तेय इस तरह जब सैनिकों का संगठन कर रहे थे, उस वक़्त मैं बीस साल का नौजवान था। एकाक्षी भी मेरी

ही उम्र का था और वह मेरे ही गाँव में रहता था।

यहाँ पर मेरे और एकाक्षी के बीच की पुरानी दुश्मनी का समाचार सुनाना जरूरी है। बचपन में हम दोनों के बीच जो दुश्मनी पैदा हुई, वही अनेक अनर्थों का क़ारण बनी। आखिर उसी दुश्मनी ने इस द्वीप को मानवों के निवास योग्य रहने नहीं दिया। उस समय दर असल एकाक्षी एक आँखवाला याने काना न था। मेरे सेवक उलूक के द्वारा ही उसकी एक आँख जाती रही और वह काना बन गया।

हमारे गाँव में एकाक्षी और मेरे भी घर अड़ोस-पड़ोस में थे। प्रारंभ से ही हमारे बीच दोस्ती के बदले दुश्मनी का भाव भी ज्यादा था। मगर उस दुश्मनी के चरम सीमा तक पहुँचने में बहुत ज्यादा वक़्त लगा।

एकाक्षी और मैं—हम दोनों ने अपनी छे साल की उम्र से चरवाहे के रूप में अपनी ज़िंदगी शुरू की। हमारे गाँव के सरदार पतंगु की बकरियों को जंगल में ले जाकर चराना ही हमारा काम था। उस वक़्त हम छोटी उम्र के थे। इस वजह से हमें जंगल में शिकार करने की अर्हता न थी। जवान लोग और दृढ़ काय व्यक्ति ही शिकार खेलने जाया करते थे।

एक दिन मैं, एकाक्षी और कुछ लड़के बकरियों को चराने जंगल में गये। वह प्रदेश घने वृक्षों से भरा हुआ था। साथ

ही उसमें सिंह, बाघ और अन्य खूंख्वार जानवर बसते थे। फिर भी उससे अच्छा प्रदेश पशुओं को चराने के लिए हमारे गाँव के समीप में न था।

बकरियों को दूर छोड़कर हम लोग एक पेड़ के नीचे बैठ गये। अचानक एक सुंदर हिरण का बच्चा मेरी बकरियों के नज़दीक आकर चिल्लाने लगा। मैंने सोचा, शायद यह अपनी माँ से अलग होकर यहाँ पर आया होगा।

उस हिरण को देखते ही मेरे मन में यह इच्छा पैदा हुई कि उसे पकड़ ले जाकर पाल लूं! मैं एक ही छलांग में वहाँ पर पहुँचा। इस बीच एकाक्षी ने भी उस हिरण के बच्चे को देखा। वह यह कहते मेरे पीछे दौड़ा आया कि "पहले मैंने उस बच्चे को देखा है, इसलिए वह मेरा ही होगा।"

लेकिन पहले वहाँ पहुँचकर मैंने उसे पकड़ लिया। मैं उसके गले में रस्सा डालकर पकड़ लाने के प्रयत्न में था। इतने में एकाक्षी वहाँ पर आ पहुँजा, 'यह हिरण मेरा है।' कहते हुए मुझ पर टूट पड़ा। मैं आपे से बाहर हो गया। एक पत्थर उठाकर उसके सर पर दे मारा। इस पर एकाक्षी चीखते हुए नीचे गिर पड़ा।

इस बीच हिरण रस्से के साथ भागने लगा। मैंने उसका पीछा किया। झाड़ियों और कंटीले पेड़ों के बीच अंधा-धुंध दौड़कर मैंने हिरण को पकड़ लिया। मैं थककर शिथिल हो चुका था। हिरण मेरे हाथ से छूटकर भाग जाने के लिए खींचातानी करने लगा। मैं उसे घसीटते चला आ रहा था।

उस हालत में मेरे कलेजे को कंपा देनेवाला सिंह का गर्जन सुनाई दिया। वह गर्जन मेरे एक दम समीप से सुनाई दे रहा था। मैंने झट से हिरण को निकट के एक पेड़ से बांध दिया और मैं पेड़ की डालों पर चढ़कर छिप गया।

मेरी घबराहट के दूर होने के बाद ही मुझे अपनी भूल मालूम हुई। हिरण रस्सा खींचते चिल्लाने लगा। मुझे इस बात का डर लगा कि अगर सिंह वहाँ से दूर चले जाते हो, तो भी हिरण की चिल्लाहट सुनकर जरूर वह वहाँ पर आ पहुँचेगा। एक-दो मिनट के अन्दर सिंह वहाँ पर आ धमका।

पेड़ की डालों पर बैठे मुझे तो वैसे जान का डर न था, लेकिन पेड़ के नीचे बंधे हिरण पर सिंह हमला कर बैठा। डर के मारे चिल्लानेवाले हिरण को देख मेरा दिल पसीज उठा। मैं चुप बैठा रह न पाया। मैंने एक सूखी डाल को तोड़कर सिंह पर फेंक दिया। यह मेरी बड़ी भूल थी। उस वक़्त सिंह ने सर उठाकर मुझे देखा।

सिंह ने सब से पहले हिरण के बच्चे को मार डाला और जितना मांस वह खा सकता था, खा चुका। पर खाते वक़्त बीच-बीच में वह अपना सर उठाकर मेरी तरफ़ देख रहा था। आखिर पेड़ पर बैठे मुझ पर आक्रमण करने के लिए वह ऊपर छलांग मारकर उछल पड़ा। मैं उसकी पकड़ से बचकर और ऊपर चढ़ गया। फिर भी सिंह अपनी कोशिश में था। सूर्यास्त तक वह पेड़ के नीचे मेरे
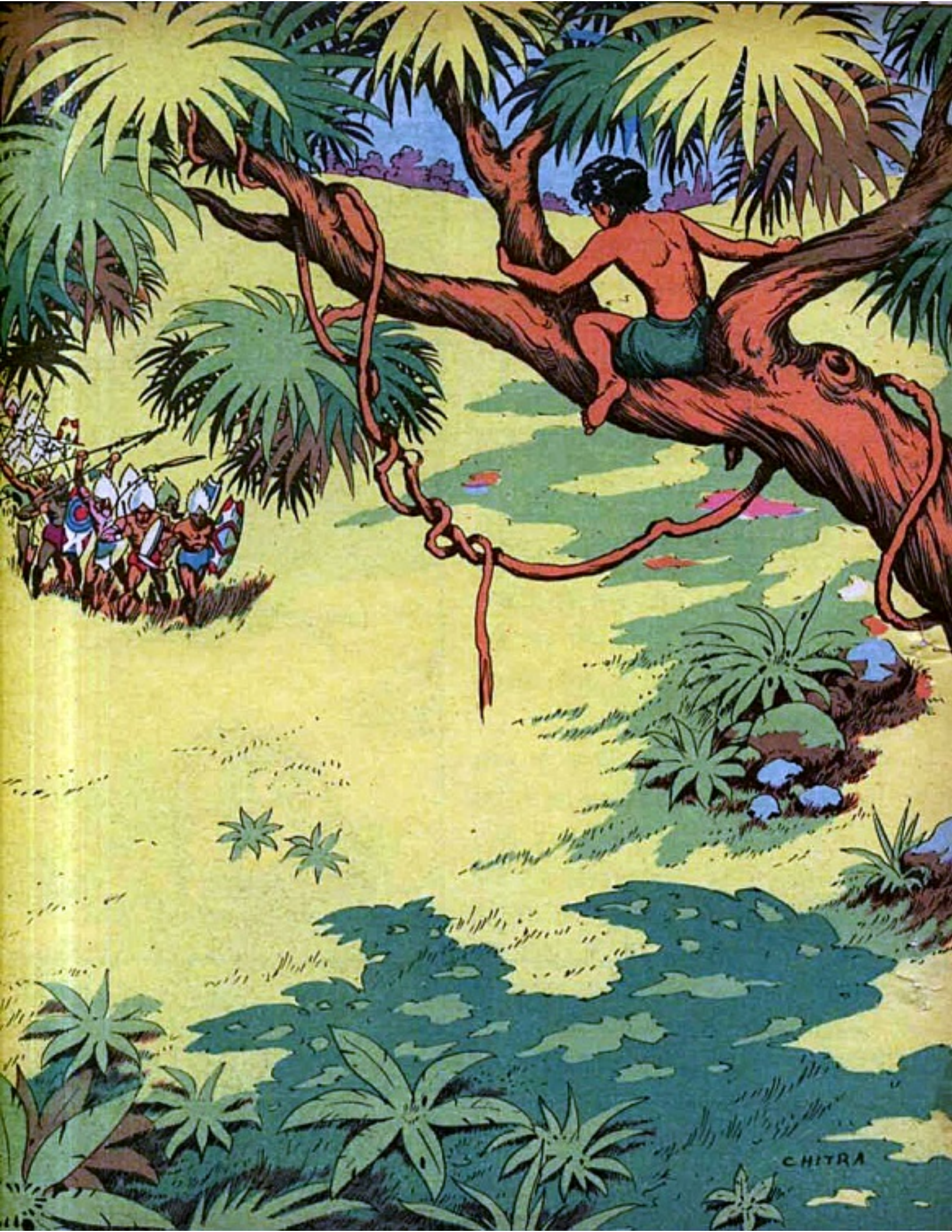
CHITRA

इंतज़ार में बैठा रहा। उस रात को मुझे नींद न आई। सवेरा होने के बाद भी पेड़ से उतर आने में मुझे डर सताने लगा। सिंह उस वक़्त पेड़ के नीचे न था, पर मुझे मालूम था कि वह इर्द-गिर्द कहीं टहलता होगा। जब-तब दूर पर उसका गर्जन मुझे सुनाई दे रहा था।

उस दिन दुपहर को मेरे कान के पर्दों को फाड़नेवाली कंडालों की आवाज़ सुनाई दी। यह इस बात का संकेत था कि मेरे गाँव के लोग मेरी खोज में चल पड़े हैं। मेरे साथ के चरवाहों ने गाँववालों को सूचना दी होगी कि मैं जंगल से घर नहीं लौटा हूँ।

कंडालों की आवाज़ धीरे धीरे मुझ को नज़दीक सुनाई देने लगी। मैंने सोचा, पेड़ से उतरकर उनके सामने चला जाऊँ, मगर मेरी हिम्मत ने जवाब दे दी। मेरी शंका बनी रही कि कल का वह सिंह यहीं कहीं ताक में बैठा रहेगा।

चालीस-पचास मेरे ग्रामवासी तलवार व भाले लेकर जंगल को गुंजा देनेवाली आवाज़ करते चले आ रहे हैं। कुछ लोग कंडाल बजा रहे हैं। वे सब अब मेरे पेड़ के नज़दीक़ पचास गज के फ़ासले तक आ चुके थे।

सिंह के बारे में मेरी शंका आख़िर सच निकली। झाड़ियों के पीछे छुपा वह सिंह अचानक मेरे ग्रामवासियों पर हमला कर बैठा। मेरे गाँववाले पहले से ही इसकी कल्पना करके बड़ी सावधानी के साथ बढ़ रहे थे।

सिंह का हमला देख वे तितर-बितर नहीं हुए। सिंह के पंजे की मार का एक मज़बूत युवक ने अपने लंबे ढाल से सामना किया। दूसरे युवक ने पीछे से उस पर वार किया।

सिंह गरजते हुए पीछे की ओर मुड़ने को हुआ। इतने में ढालवाले युवक ने उस पर भाले का प्रहार किया। चोट

खाकर सिंह भयंकर रूप से गरजते हुए उस पर हमला करने को हुआ। दूसरे युवक ने उसकी पूँछ पकड़कर उसकी पीठ पर तलवार चलाई।

सिंह खूब घायल हो चुका था। उन दोनों युवकों ने अंधा धुंध सिंह पर तलवारों और भालों का प्रहार किया। सिंह बुरी तरह से घायल हो नीचे गिरकर छटपटाने लगा। पेड़ की डालों पर बैठे मैं इस दृश्य को देख रहा था। मुझे बड़ी खुशी हुई। मैं ताबड़-तोड़ पेड़ से उतरते हुए जोर से चिल्ला उठा।

उस वक़्त जो विचित्र बात हुई, उसे मैं खुद अपनी आँखों से देखकर भी यक़ीन न कर पाया। शायद दुनिया का कोई भी आदमी विश्वास न करेगा। जब मैं चिल्लाया, तब मेरे गाँव के सभी लोगों ने अपने सिर उठाकर मेरी तरफ़ देखा। दूसरे ही क्षण कंडाल बजानेवाला एकाक्षी "भूत! भूत!" चिल्लाते पीछे मुड़कर भागने लगा। झपकी मारने की देर थी, बस, सभी लोग 'भूत! भूत!' चिल्लाते तितर-बितर हो गये।"

अब तक बड़े कुतूहल के साथ यह सारी कहानी सुननेवाला समरसेन विस्मय में आकर बोला—"यह तो बड़ा ही अजीब मालूम होता है, तुम को देख गाँव के बड़े लोगों तक कैसे भूत समझने लगे?"

चतुर्नेत्र ने जोर से दांत किटकिटाकर कहा—"यह सब उस एकाक्षी की चाल थी। जब वह भूत का नाम लेकर डर के मारे भागने लगा, तब बाक़ी लोग मेरी ओर ध्यान से देखे बिना भय कंपित हो भेडिया धंसान की भांति उसका अनुसरण करने लगे। इस एक घटना के जरिये तुम समझ सकते हो, उस छोटी-सी उम्र में ही एकाक्षी कैसी दुष्ट बुद्धि रखता था। उसने मेरे गाँव के छोटे व बड़े लोगों को विश्वास दिलाया कि मैं मरकर भूत बन गया हूँ। इसके बाद दस वर्षों तक मुझे भूत के रूप में ही जंगलों में भटकते जीना पड़ा।"

(और है)

दुश्मनी का प्यार

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ पर से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति श्मशान की ओर चलने लगा, तब शव में स्थित बेताल ने पूछा–"राजन, कोई भी अपने मन की बात समझ नहीं पाता। विचार मन की गहराइयों को छू नहीं पाते। कोई कोई जिसे द्वेष करता है, उसके वास्ते अपने प्राण भी त्यागने को तैयार हो जाता है। इसके उदाहरण के रूप में मैं आप को दो भाइयों की कहानी सुनाता हूं। श्रम को भुलाने के लिए सुनिये :

बेताल ने कहानी शुरू की : नागभूषण और गंगाधर नामक दो भाई थे। दोनों किसान थे। उनके बीच गहरी दुश्मनी थी। आपस में ईर्ष्या और द्वेष के कारण उनके बीच जो मन मुटाव हुआ, वह दिन ब दिन बढ़ता ही गया। आखिर हालत

बेताल कथाएँ

यहां तक पहुंची कि वे एक दूसरे का सर्वनाश करने पर तुल गये।

एक बार मवेशियों का झुंड पहाड़ पर उतरकर आ रहा था। रास्ते में नागभूषण का खेत था। उसमें कुछ मवेशी घुस पड़े और उसकी फ़सल बरबाद करने लगे। इसे देख गंगाधर मन ही मन बड़ा खुश हुआ कि उसके भाई की फ़सल बरबाद हो रही है, पर उसने मवेशियों को हांकने की कोशिश न की। इतने में चरवाहा आकर उन्हें हांक ले गया। यह बात मालूम होने पर नागभूषण ने चरवाहे को पीटा, इस पर गंगाधर ने गाँववालों से शिकायत की—"मेरे भाई ने चरवाहे को खूब पीटा है। मवेशी अचानक खेत में घुस गये, तो बेचारा वह क्या कर सकता है? वह तुरंत मवेशियों को हांक ले गया। वरना सारी फ़सल बरबाद हो जाती। मेरे भाई को इस बात का घमण्ड हो गया है कि उसके खेत में इस साल सब से अच्छी फ़सल होनेवाली है। ऐसे घमण्डी को भगवान भी क्षमा नहीं कर सकते। इसका फल वह भोगेगा।"

अपने छोटे भाई के द्वारा यह दुष्प्रचार होते देख नागभूषण गुस्से में आ गया।

इस घटना के थोड़े दिन बाद गंगाधर गाड़ी में पुआल लादकर पहाड़ी रास्ते से लौट रहा था। उसके एक बैल के पैर में मोच आ गई और वह गिर पड़ा। बोझ से लदी गाड़ी को उठाना अकेले के लिए नामुमकिन था। इसलिए उसने आसपास के खेतों में काम करनेवालों की मदद मांगी। तब पता चला कि बैल का पैर टूट गया है। यह बात मालूम होते ही नागभूषण मन ही मन बड़ा खुश हुआ। हर किसी से यही कहता-फिरता था—"सुना है, बेचारे मेरे छोटे भाई के बैल का पैर टूट गया है! हां, आखिर भगवान भी तो जानते हैं कि किसका घमण्ड कैसे तोड़ना है?"

यह समाचार मालूम होते ही गंगाधर एकदम आग बबूला हो उठा।

इधर भाइयों के बीच ईर्ष्या की आग धधक रही थी, उधर उनकी पत्नियों के बीच भी ईर्ष्या की आग सुलगती गई। अपने पतियों के बीच दुश्मनी बढ़ते देख वे भी अपने मन पर क़ाबू खो बैठीं। वे भी खुले आम एक दूसरे की शिकायत करने लगीं। अड़ोस-पड़ोस की औरतों ने इधर की बातें उधर और उधर की बातें इधर पहुँचाकर उस ईर्ष्या की आग में घी डालने का काम किया।

एक बार गंगाधर की पत्नी ने सोने का कोई गहना बनवा लिया, उस पर उसे नाज था। बातों के सिलसिले में वह अड़ोस-पड़ोस की महिलाओं से कहती-फिरती थी–"हाँ, केवल धन होने मात्र से फ़ायदा ही क्या रहा? आखिर उसे भोगने का भी योग होना चाहिए।"

पड़ोसी औरतों ने नमक-मिर्च लगाकर उन बातों को नागभूषण की पत्नी के कानों में डाल दिया। उसने सोचा कि ये बातें गंगाधर की पत्नी उसी को लक्ष्य कर कह रही है। वह आँखों में आंसू भरकर बोली–"क्या हम्हीं लोग कंगाल हैं? हम उससे भी बढ़िया गहना खरीद ले तभी देवरानी का घमण्ड टूट जाएगा।"

नागभूषण ने अपनी पत्नी की बात के समर्थन में उसे बढ़िया चन्द्रहार बनवा

लिया। कोई बहाना बनाकर नागभूषण की पत्नी पड़ोसिनों के घर पहुँची और मौक़ा पाकर बोली–"मेरे चन्द्रहार को देख तुम लोग खुश हो रही हों, मगर ऐसी भी कमबख्त औरतें हैं जिन्हें मेरा यह हार फूटी आँख नहीं सुहाता!"

यह बात भी गंगाधर की पत्नी के कानों में पड़ गई। उसने खीझकर कहा–"वह चन्द्रहार मुझे ऐसा लगता है जैसे नादिया की आँखों पर बंधी अंधोही हो। उसे देख ललचानेवाले भी कोई हो सकते हैं?"

ऐसी छोटी-मोटी घटनाएँ बराबर होती रहीं, आखिर जेठानी और देवरानी परस्पर

शाप देने लगीं। एक दिन झगड़ा बढ़ते-बढ़ते उनके बीच हाथा-पाई भी हो गई।

एक बार बरसात के मौसम में मूसलधार वर्षा हुई। गंगाधर के घर की दक्षिणी दीवार में दरारें पड़ गईं। छत भी चूने लगी। गंगाधर उसकी मरम्मत करने के ख्याल से छत पर चढ़ गया। इतने में आँखों को चौंधियानेवाली बिजली कड़क उठी। भयंकर गर्जन के साथ बिजली गिर गई। साथ ही गंगाधर की छत का थोड़ा हिस्सा गिर गया।

गंगाधर की पत्नी दहाड़े मारने लगी। उसने अपने पति को पुकारा, पर कोई जवाब न मिला। घबड़ाकर वह पड़ोसी घर पहुँची, अपनी जेठानी के गले लगकर रो पड़ी–"दीदी, अपने देवर को बचा लो!"

जेठानी एक दम तड़प उठी। अपने पति को स्तब्ध देख बोली–"अजी, देखते क्या हैं? लालटेन लेते आइयेगा। बेचारे देवर पर न मालूम क्या बीत रहा है।"

तीनों ने घटना स्थल पर जाकर देखा, मलबे के नीचे गंगाधर बेहोश पड़ा था। नागभूषण ने उसे बाहर निकाला और अपने घर ले आया। वैद्य ने आकर इलाज किया। तब जाकर गंगाधर ने आँखें खोलीं। जल्द ही गंगाधर पूर्ण रूप से चंगा हो गया। इसके बाद उन दो परिवारों के बीच दुश्मनी नाम मात्र के लिए भी नहीं रही। इस घटना के कई साल बाद भी बातों के सिलसिले में जब मौक़ा मिलता, गंगाधर की पत्नी अपनी कृतज्ञता प्रकट करते कहा करती थी–"उस दिन मेरे जेठ ने भगवान की तरह आकर मुझे विधवा होने से बचाया है।"

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा–"राजन, वास्तव में उन भाइयों के बीच दुश्मनी है या परस्पर आत्मीयता? दोनों वैसे एक दूसरे का नुक़सान होते देख खुश हुआ करते थे न? नागभूषण अपने छोटे भाई को उस खतरे की हालत में बचाने के लिए क्यों दौड़ा-दौड़ा आया? इसके बाद

उनके बीच वह पुरानी दुश्मनी कैसे अचानक गायब हो गई? इस संदेह का समाधान जानते हुए भी न देंगे, तो आप का सर फटकर टुकड़े-टुकडे हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया– "आत्मीयता के जैसे मनुष्यों के बीच ईर्ष्या और द्वेष भी न तोड़े जा सकनेवाला एक बंधन है। जहाँ निर्लिप्त भाव होता है, वहाँ पर कोई बंधन नहीं होता। मनुष्य द्वेष के द्वारा ही दूसरों से संबंध रखते हैं। इस कारण जैसे प्रेम और अनुराग गहरे हो सकते हैं, वैसे शत्रुता भी उतनी भी गहरी होती है। लेकिन यह शत्रुता अत्यंत निकट रिश्ते के लोगों में या भाइयों के बीच पैदा हो जाती है, तब यह सीमा पार कर जाती है। सभी प्रकार की शत्रुताओं में आगर्भ शत्रुता बड़ी तीव्र होती है। यह सोचना भूल होगी कि गंगाधर की मृत्यु से नागभूषण को प्रसन्नता होगी। छोटे भाई की मृत्यु के साथ उन दोनों के बीच का बंधन सदा के लिए टूट जाएगा, तब उसके लिए बचा क्या रहेगा? क्योंकि भाइयों के बीच की दुश्मनी स्वार्थ रहित है। क्योंकि एक के मरने से दूसरे का कोई लाभ न होगा। इसलिए गंगाधर की जान बचाना नागभूषण के लिए बड़ा ही सहज है। इसके बाद उनके बीच की दुश्मनी के गायब होने के दो कारण हैं: एक यह कि क्रोध से भी प्रेम शक्तिशाली होता है, जहाँ प्रेम है, वहाँ पर दुश्मनी अपना सर उठा नहीं सकती। दूसरा शायद उपकार पानेवाला व्यक्ति अपने प्रति हुए उपकार को भूल सकता है, मगर उपकार करनेवाला अपने उपकार को जन्म भर भूल नहीं सकता। जहाँ दोनों भाई अपने अपने प्रति हुए उपकार को भूलने की स्थिति में नहीं हैं, वहाँ पर दुश्मनी के लिए स्थान ही कहाँ?"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

चोरी का एक राग

मनोहर उस गाँव का एक मशहूर गायक था। लेकिन वह हमेशा नीलांबरी राग ही आलपता था। अगर कोई उससे दूसरा राग आलपने को कहता तो वह ठीक से गा नहीं पाता था। इसलिए उसके जान-पहचान के लोग उसके द्वारा नीलांबरी राग ही गवाकर तन्मय हो जाते थे। यही नहीं, लोग अकसर कहा करते थे कि मनोहर अगर नीलांबरी राग सुनाता है तो पत्थर भी पिघल जाते हैं। पत्थरों के पिघलने की बात चाहे सही न हो, मगर उसके नीलांबरी राग सुननेवालों पर वह जादू का काम कर देता था। वह राग श्रोताओं पर नशे का काम कर जाता था।

मनोहर के दुश्मन तक जानते थे कि वह नीलांबरी गाकर लोगों को सुलाता है। इसलिए अगर कोई यह कहते— "मनोहर जैसे नीलांबरी राग गानेवाले दूसरे कोई नहीं हैं!" तो उसके दुश्मन यह कहकर निंदा करते थे—"तुम्हारा सर, तुम तो सो गये होगे! सुना भी हो तब न तुम उसके बारे में कुछ कह सकते थे?"

पर मनोहर के समर्थक झट यह कह बैठते थे—"क्या यह कम है? आज के जमाने में संगीत सुनाकर लोगों को सुला सकनेवाले हैं ही कौन?"

"मेरी दादी रोज गीत गाकर मुझे सुलाया करती थी। इसका तुम क्या जवाब दोगे?" मनोहर से ईर्ष्या करनेवाले कहा करते।

चाहे जो हो, उस गाँव के सभी लोग यह मानते थे कि मनोहर के नीलांबरी गाने पर हर कोई सो जाता है।

एक दिन मनोहर की खोज में एक व्यक्ति आ पहुँचा। वह देखने में बुजुर्ग

गंगाधर पांडे

जैसा लगता था, पर सच में उसका पेशा चोरी करने का था।

उस बुजुर्ग ने मनोहर के हाथ में कुछ रुपये थमाकर कहा–"महाशय, कल रात को आप को अपना संगीत सुनाना होगा। मैं पहले ही रुपये दे देता हूँ।"

"कल रात को कहाँ? और कितने बजे?" मनोहर ने उत्सुकता पूर्वक पूछा। आज तक किसी ने मनोहर को रुपये अग्रिम नहीं दिये थे। इसलिए वह बड़े ही उत्साह में आ गया।

"रात को बारह बजे आप को अपना संगीत शुरू करना होगा! मैं अभी नहीं बता सकता कि कहाँ पर कार्यक्रम होगा! कल रात को मैं खुद आकर आप को अपने साथ ले जाऊँगा। हम जो स्थान निश्चय करेंगे, वहीं पर आप गायेंगे।" उस व्यक्ति ने समझाया।

मनोहर यह सोचकर अचरज में आ गया कि आधी रात के वक़्त संगीत सभा कैसी? पर उसे उसका पारिश्रमिक मिल गया था, इस वजह से उसने इस बात पर ज्यादा माथा-पच्ची नहीं की।

दूसरे दिन रात को वह व्यक्ति अपने एक साथी चोर को ले आ पहुँचा और मनोहर को एक खजाने के समीप ले गया।

खजाने के निकट तीनों बैठ गये। मनोहर ने अपना संगीत शुरू किया। नीलांबरी राग सुनते खजाने के पहरेदार जब सो जायेंगे, तब चोरों ने चोरी करने का निश्चय किया था।

मगर पहरेदार नेपाल देश के निवासी थे। वे लोग दक्षिण के संगीत के प्रति ज्यादा अभिरुचि नहीं रखते थे।

मनोहर अपना नीलांबरी राग आलपता रहा। सवेरा हो गया। चोर खुर्राटे लेते हुए कभी के सो गये थे। खजाने के पहरेदारों ने आकर उन्हें जगाया और बोले–"अजी, तुम लोग और कब तक संगीत सुनोगे? सवेरा हो गया है। अपने अपने घर चले जाओ।" यों डांटकर उन्हें वहाँ से भगा दिया।

सिर्फ़ एक बार!

सीतापुर के जमीन्दार के घर कई सालों बाद एक लड़का पैदा हुआ। बालक का नामकरण गोपाल किया गया। वह लाड़-प्यार में पला। दस साल के होते-होते वह एक दम बेवकूफ़ और जिद्दी निकला। वह कभी सवेरे नहीं जागता, कभी नहाता भी नहीं, हमेशा खेलता रहता, किसी वक़्त खाना खाकर भाग जाता।

जमीन्दार यह सोचकर डर गये कि आखिर एक लड़का पैदा हुआ तो वह भी निकम्मा निकला। उसे डराया, धमकाया। प्यार से समझाया, पर कोई फ़ायदा न रहा। घरवालों की बात न सुनते देख जमीन्दार ने बड़े-बड़े पंडितों को बुलवाकर उसे रास्ते पर लाने की प्रार्थना की, लेकिन वे भी उसे सुधार न पाये।

उस हालत में उस गाँव में एक युवक आया। वह अनाथ था। जमीन्दार ने उस युवक को बुलाकर समझाया—"अगर तुम मेरे लड़के को समझा-बुझाकर सही रास्ते पर लगा सको तो तुम्हें मेरे घर में हमेशा के लिए खाना-कपड़ा मिला करेगा।"

नये युवक ने गोपाल के साथ दोस्ती कर ली और तरह-तरह की कहानियाँ सुनाकर खेल-कूद के द्वारा भी उसे अपनी ओर आकृष्ट किया।

युवक को लगा कि गोपाल स्वभाव से अक़्लमंद ही है, पर उसकी दृष्टि को पढ़ाई के प्रति खींच सके, तो वह सुधर सकता है। पर उसने युवक से पूछा—"मुझे तो यही अच्छा लगता है, मुझे अपने को किसलिए बदलना है?"

"कोई भी बात अनुभव के जरिये ही समझी जा सकती है। तुम हर दिन एक बार नहाकर तो देख लो। एक बार बड़ों को प्रणाम करके देखो। तब तुम्हें खुद

मालूम हो जाएगा कि इसमें तुम को कैसा सुख मिलता है?" युवक ने समझाया।

"मैं तुम को बहुत चाहता हूं, इसलिए तुम्हारी बात मान जाऊंगा। लेकिन सिर्फ़ एक ही बार करूंगा! रोज़ मैं सवेरे उठूंगा! एक ही बार नहाऊंगा! एक ही पन्ना पढ़ूंगा! तुम्हें मुझे दिन भर खिलाना होगा!" गोपाल ने अपनी शर्तें बताईं।

युवक ने जमीन्दार को गोपाल की बातें कह सुनाईं। जमीन्दार यह सुनकर खुश हुए और बोले-"कुछ हद तक यह भी ठीक है। एक बार वह क्रमबद्ध जीवन का आदि हो गया तो धीरे-धीरे वही बदल जाएगा।" दूसरे दिन से गोपाल अपने बचन के मुताबिक़ सवेरे उठने लगा। नहाकर किताब का एक पन्ना पढ़ लेता, अपने पिता को एक बार प्रणाम करता, फिर खेलने चला जाता।

एक दिन जमीन्दार के एक रिश्तेदार उन्हें देखने आया। गोपाल को दिन भर खेलते देख जमीन्दार से पूछा-"क्या आप लड़के को पढ़ाते नहीं?"

"मेरा लड़का रोज सवेरे जागता है, नहाकर बड़ों को प्रणाम करके तब पढ़ लेता है। इसके बाद ही वह खेलने के लिए चला जाता है।" यों जमीन्दार ने गर्व के साथ अपने रिश्तेदार को गोपाल की आदतें सुनाईं। तब अपने बेटे को बुलाकर कहा-"बेटा, ये तो तुम्हारे काका लगते हैं। इनके चरणों में प्रणाम करो। तुम्हें आशीर्वाद देंगे।"

पर गोपाल ने तिरस्कार पूर्वक कहा- "मैं दिन में एक ही बार किसी एक को प्रणाम करता हूं। आज के लिए तो मैंने आप को प्रणाम किया है। चाहे तो कल सवेरे आप को प्रणाम करने के बदले इनको प्रणाम करूंगा।" यों कहकर वह खेलने के लिए भाग गया।

जमीन्दार ने बड़े ही अपमान का अनुभव किया, तब युवक को बुलवाकर पूछा-"तुम गोपाल को जो तरीक़ समझाते

हो, उसके जरिये मेरी इज्ज़त धूल में मिलती जा रही है।" इन शब्दों के साथ जमीन्दार ने सारी कहानी सुनाई।

युवक ने गोपाल के पास जाकर डांटा– "तुम्हारी वजह से मेरा बदनाम हो गया है। बड़ों को प्रणाम करना अच्छी आदत है। उनके आशीर्वाद पाने से तुम्हारा ही भला होगा। आइंदा तुम बड़ों के साथ ऐसा बर्ताव न करो।"

पर गोपाल लापरवाही दिखाते बोला– "मैं अपनी बात पर डटा रहता हूँ। मैंने एक बार कहा, बस, सिर्फ़ एक ही बार!"

"वाह, तुम भी बड़े ही सत्य हरिश्चन्द्र निकले! क्या तुम अपनी बात बदलोगे नहीं? अगर बदल जाओगे तो?" युवक ने गोपाल को चुनौती दी।

"अगर मैं अपनी बात से मुकर जाता हूँ, तो फिर तुम जैसा कहोगे, वैसा करूँगा।" गोपाल ने दृढ़ स्वर में कहा।

अब युवक को गोपाल को बदलने की तरक़ीब सूझी। उसी दिन युवक ने खेल के बहाने गोपाल के शरीर को गंदा बनाया जिससे उसके बदन से बदबू आने लगी। खेलों में डूबे रहने की वजह से गोपाल तुरंत उस बदबू का ख़्याल न कर पाया, पर बाद को वह उस बदबू को सहन न कर सका। युवक ने गोपाल से कहा– "चलो, नदी में जाकर नहा लें।"

"आज के लिए तो मैं नहा चुका हूँ। फिर दुबारा मैं नहीं नहाऊँगा।" गोपाल ने साफ़ कह दिया।

अकेला युवक ही नदी में स्नान कर लौटा, गोपाल बिना नहाये घर चला गया।

"बेटा, तुम्हारे बदन से बदबू निकलती है। नहाकर आ जाओ।" गोपाल की माँ ने कहा। लेकिन गोपाल ने नहीं माना। उसने यहाँ तक धमकी दी कि अगर जबर्दस्ती उसके द्वारा नहलवा लेंगे तो वह खाना नहीं खायेगा!

"बेटा, तब तो तुम्हारे साथ बैठकर हम लोग खाना कैसे खावें? घर में

रिश्तेदार भी तो आये हुए हैं!" गोपाल की माँ ने कहा।

गोपाल ने अकेले खाना खाया, बिस्तर गंदा हो जाएगा, इस ख्याल से वह फ़र्श पर लेट गया। मगर उसने स्नान नहीं किया। युवक ने जमीन्दार को बताया कि उसका प्रयत्न असफल हो गया है। इसलिए उसे क्षमा करें।

जब जमीन्दार को मालूम हुआ कि उसके बेटे ने सब के साथ खाना नहीं खाया, और फ़र्श पर सो गया है, तब वह बड़ा दुखी हुआ और युवक से बोला- "आइंदा तुम उस पर ऐसे प्रयोग मत किया करो!"

मगर गोपाल का सुधर जाना युवक की दृष्टि में आवश्यक था। क्योंकि अगर गोपाल सुधर न गया तो जमीन्दार युवक को हमेशा के लिए आश्रय न देगा! युवक समझ गया कि जमीन्दार के लाड़-प्यार के कारण ही गोपाल बिगड़ता जा रहा है!

एक बार उस देश के राजा उस गाँव में आये, एक दिन के लिए वहीं रुके। गाँव के बुजुर्ग लोग अपने परिवारों के साथ आकर राजा को भेंट-उपहार समर्पित कर रहे थे। जमीन्दार भी अपने परिवार के साथ युवक को भी साथ ले राजा के दर्शन करने गया।

जमीन्दार ने जो उपहार राजा को दिया, वह उन्हें पसंद आया। उस वक़्त युवक ने गोपाल से कहा-" ये हमारे राजा हैं। इन्हें प्रणाम करो।"

गोपाल ने अपनी आदत के मुताबिक़ नटखटपूर्ण जवाब दिया। राजा गुस्से में आकर बोले—"क्या तुम दिन में एक ही बार प्रणाम करते हो? राजा के सामने भी क्या तुम दूसरी बार प्रणाम नहीं करोगे?"

जमीन्दार ने भांप लिया कि राजा के इस क्रोध का परिणाम बड़ा बुरा हो सकता है, इससे वह डर गया। तब गुस्से में आकर अपने बेटे के गाल पर खींचकर थप्पड़ मारा। तब बोला—"तुम्हारी जिद्दी का भी कोई अंत होना चाहिए। देवता जैसे राजा को प्रणाम नहीं करोगे? उनके पैरों पर गिरकर माफ़ी माँग लो।"

गोपाल ने कभी अपने पिता को ऐसे गुस्से में आते और पीटते न देखा था। वह एक दम भय के मारे कांप उठा और राजा के पैरों पर गिरकर अपनी करनी के लिए माफ़ी माँग ली।

राजा लड़के पर प्रसन्न हो गये। अपने क्रोध को भूल गये।

घर लौटने पर युवक ने गोपाल की प्रतिज्ञा की याद दिलाकर जमीन्दार से कहा—"आप के बेटे ने अपने वचन का पालन नहीं किया। आज से वह मेरे कहे मुताबिक़ करेगा। क्योंकि आज उसने दो बार प्रणाम किया है। आप ने देखा है न कि गोपाल का व्यवहार कैसा खतरनाक है! जब तक आप ने उसे सुधारने का कोई उपाय न देखा, तब आप ने उस पर हाथ चलाया। यह बात जानकर ही मैंने आज उसके साथ ऐसा व्यवहार करने को कहा। अगर मैंने आप के दिल को दुखाया हो तो कृपया मुझे माफ़ कर दीजिएगा।"

यह बात सच है कि युवक के कारण ही जमीन्दार ने अपने बेटे को पीटा था। फिर भी गोपाल अपने वचन का पालन करके बुद्धिमान बना। इसलिए जमीन्दार ने भी युवक को जैसा वचन दिया था, उसके अनुसार उसे अपने घर में हमेशा के लिए खाना-कपड़े का प्रबंध किया।

Hindi Feb F—5 P. 32

गाड़ियों को नदी पार कराना है, तुम लोग जितना भी धन माँगो, मैं दे दूंगा ।"

"आप इस बछड़े को ले जाकर अपनी गाड़ियों को नदी पार करवा लीजिए । इसके अपना कोई मालिक नहीं है । यह तो स्वेच्छा पूर्वक घूमा करता है ।" चरवाहों ने जवाब दिया ।

व्यापारी ने काले बछड़े के गले में रस्सा बंधवाकर उसे खींच ले जाना चाहा । मगर काला बछड़ा एक अंगुल भी न हिला । उसे खींच ले जाना व्यापारी के अनुचरों के लिए नामुमकिन साबित हुआ ।

व्यापारी थोड़ी देर तक सोचता रहा । अचानक उसे यह बात सूझी कि यह बछड़ा शायद अपनी मेहनत का फल चाहता होगा । तब उस बछड़े से बोला—"तुम्हारी रूप-रेखाओं को देखने पर तुम कोई वृषभ राजा जैसे लगते हो! तुम मेरी पाँच सौ गाड़ियों को नदी पार कराओ! मैं हर एक गाड़ी के पीछे दो-दो सिक्कों के हिसाब से एक हज़ार सिक्के तुम्हें इनाम दूंगा ।"

व्यापारी के मुंह से इन बातों के निकलने की देरी थी कि काला बछड़ा हिल उठा और नदी के किनारे खड़ी हुई गाड़ियों के पास जा खड़ा हुआ । व्यापारी के अनुचरों ने बछड़े को एक गाड़ी से जोत दिया । बछड़ा आसानी से गाड़ी को नदी के उस पार खींच ले गया ।

सारी गाड़ियों को नदी के पार पहुँचाने के बाद व्यापारी ने एक लंबी थैली में

पांच सौ सिक्के भरकर उसे काले बछड़े के गले में बांध दिया। व्यापारी के इस धोखे को भांपकर बोधिसत्व ने सोचा– "इस व्यापारी के मन में दुर्बुद्धि पैदा हो गई है। इसने अपना वचन तोड़ दिया है।" फिर बछड़े ने जाकर सब से पहले जिस गाड़ी को नदी पार कराया था, उस गाड़ी के आगे खड़े हो सभी गाड़ियों को आगे बढ़ने से रोक दिया।

इस पर व्यापारी समझ गया कि काला बछड़ा साधारण जानवर नहीं है, वह अद्भुत ज्ञान रखनेवाला है। इस विचार के आते ही व्यापारी ने पाँच सौ सिक्के और एक दूसरी थैली में डालकर उसे भी बछड़े के गले में बांध दिया और बोला– "महाशय, मुझे क्षमा कर दो! मैंने जो वचन दिया था, उसके अनुसार एक हज़ार सिक्के तुम्हारे गले में बांध दिये। अब मेरी गाड़ियों को आगे बढ़ने के लिए रास्ता दे दो।"

बछड़ा वहाँ से सीधे भठियारिन के घर चला गया। पाँच सौ गाड़ियों को बालू से भरी नदी में खींचने के कारण वह थक चुका था। इसे देख भठियारिन एक कपड़ा लेकर बछड़े के बदन को पोंछते उसका गला सहलाने लगी। तभी उसके गले में बंधी थैलियों पर भठियारिन की नज़र पड़ी।

थैलियों को खोलकर भठियारिन ने देखा कि उनमें एक हज़ार सिक्के भरे हैं। वह अचरज में आ गई। तभी चरवाहों ने आकर सारी कहानी उस बुढ़िया को सुनाई। भठियारिन आँखों में आँसू भरकर उसका सर सहलाते बोली–"बेटा, तुमने मेरे वास्ते कैसी मेहनत उठाई, मैं इस धन को लेकर क्या करूँगी?" फिर उसी वक़्त बछड़े के बदन की पीड़ा को दूर करने के ख़्याल से बूढ़ी ने उसे तेल मलकर गरम पानी से ख़ूब नहलाया।

इस प्रकार अपने को बड़े प्यार के साथ पालनेवाली माता का ऋण चुकाकर बोधिसत्व ने अपने बछड़े का अवतार समाप्त किया।

माता का ऋण

ब्रह्मदत्त काशी राज्य पर जिस समय शासन करते थे, उन दिनों में बोधिसत्व एक सुंदर बैल के बछड़े के रूप में पैदा हुए। वह बछड़ा श्याम वर्ण का था। देखने में मन को मोह लेता था। उसकी सुंदरता पर उसके मालिकों के साथ अन्य लोग भी मुग्ध हो जाते थे।

उस बछड़े के मालिक एक भठियारिन के घर किराये पर रहा करते थे। कुछ दिन बाद उन्हें उस गाँव को छोड़कर जाना पड़ा। जब वे लोग जाने लगे, तब वे किराये के बदले वह बछड़ा भठियारिन को देकर चले गये।

भठियारिन के अपना कहनेवाला कोई न था, वह उस काले बछड़े को अपने बेटे के समान पालने लगी।

चावल का मांड, कांजी मिलाकर सानी बनाती और तब उसे पिलाती। रोज काले बछड़े को नहर के पास ले जाती, घास के तिनकों से उसका बदन साफ करती, इतने प्यार के साथ पालते हुए भी भठियारिन ने कभी उस बछड़े को खूंटे से नहीं बांधा।

काला बछड़ा ज्यों-ज्यों बढ़ता गया, त्यों-त्यों उसके सींग उगने लगे। वह अन्य पशुओं के साथ सारा गाँव स्वेच्छापूर्वक घूम आता। बच्चे उस पर चढ़कर सवारी करते, उसका गल कंबल सहलाकर उसके साथ खेलते।

एक दिन काले बछड़े ने अपने मन में यों सोचा–"मुझे पालनेवाली भठियारिन बड़ी गरीब है। वह मेरी बड़ी सेवा करती है, मेरे वास्ते बड़ी मेहनत भी करती है। अगर मैं उसके वास्ते थोड़ा धन कमाकर दूं तो उसकी मेहनत घटाने का मुझे संतोष होगा।"

इस विचार के आते ही वह धन कमाने के उपाय सोचने लगा। उस हालत में एक दिन कोई व्यापारी पाँच सौ गाड़ियों पर अनाज लादकर उसी गाँव की ओर चल पड़ा। सारी गाड़ियाँ साधारण रास्ते पर बड़ी सुगमता के साथ सफ़र करती रहीं। लेकिन उस गाँव के समीप में एक नदी पड़ती थी।

उस रेतीली जमीन में बड़ी कोशिश के बावजूद भी गाड़ियों को बैल खींच न पाये। इस वजह से सारी गाड़ियाँ नदी के किनारे ही रुक गईं। गाँव से बैलों को ले जाकर व्यापारी ने अपनी गाड़ियों को नदी पार कराना चाहा। मगर उसकी कोशिश बेकार साबित हुई।

उस वक़्त बोधिसत्ववाला काला बछड़ा नदी के उस पार अन्य पशुओं के साथ घास चर रहा था। उनमें शायद गाड़ी खींच सकनेवाले कोई बैल हो, इस विचार से व्यापारी वहाँ पहुँचा।

व्यापारी की दृष्टि को काले बछड़े ने आकृष्ट किया। उसने अपने मन में सोचा—"यह काला बछड़ा बहुत ही असाधारण मालूम होता है। इसकी मदद से मेरी गाड़ियों को बड़ी आसानी से नदी पार कराया जा सकता है।"

यों सोचकर व्यापारी ने वहाँ के चरवाहों को बुलाकर पूछा—"लड़को, सुनो, यह काला बछड़ा किसका है? इसे हमें थोड़ी देर के लिए उधार दोगे? मेरी
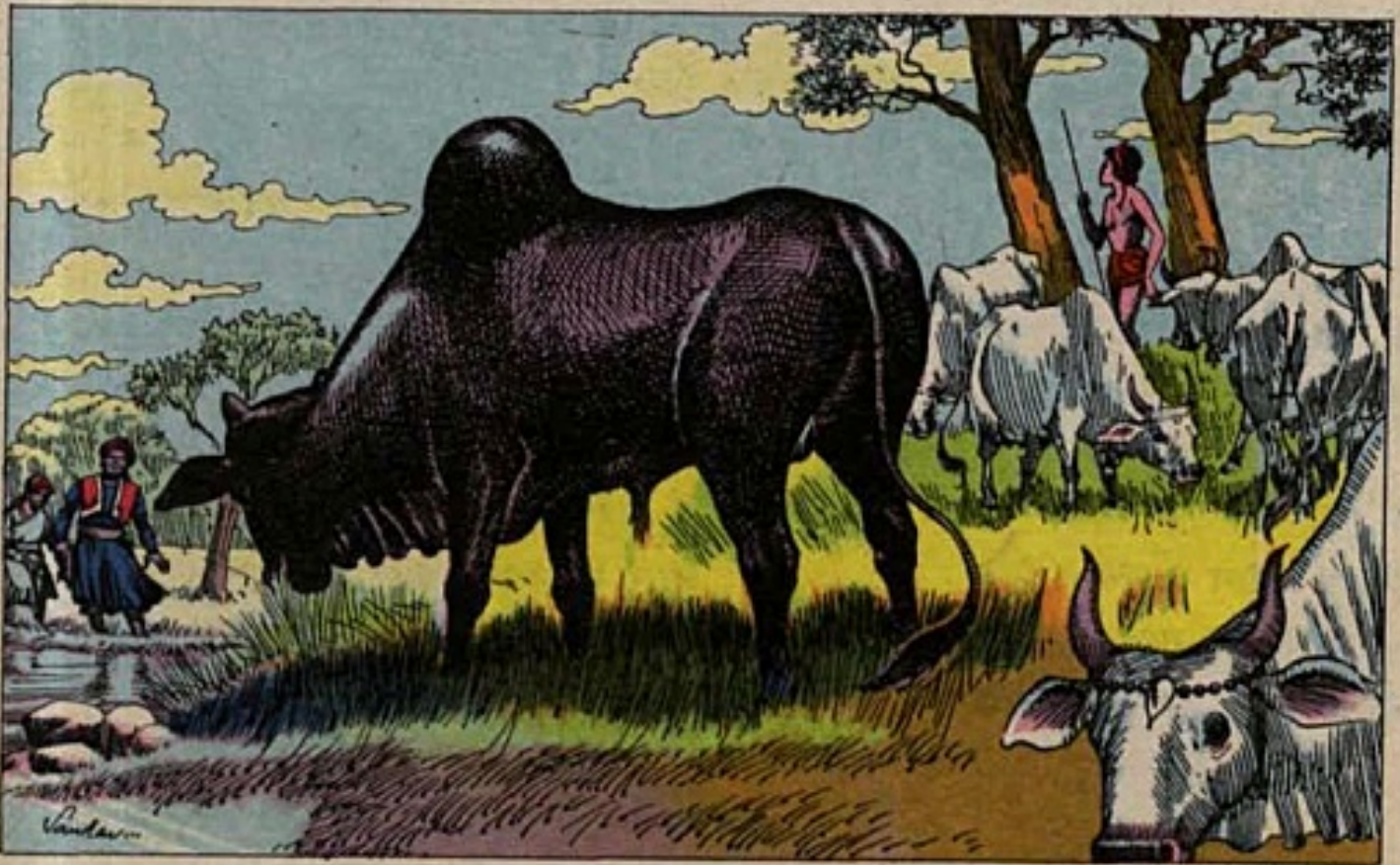
महाकवि कालिदास

कौमार अवस्था के एक युवराजा ने अपनी माँ के पास जाकर पूछा–"माँ, मुझे इसी वक्त एक तलवार दे दो।" माँ ने पूछा–"किसलिए बेटा?" युवराजा ने झट कहा–"युद्ध करने के लिए।" माँ ने हँसकर बताया–"बेटा, तुम जब और थोड़ा बड़े हो जाओगे और तलवार चलाने की उम्र आने दो, तब दूँगी।"

वही युवराजा विक्रमादित्य है। मध्य एशिया से शक नामक एक जाति ने आकर भारत पर आक्रमण किया और यहाँ पर अपने राज्य स्थापित किये। उस भयंकर जाति को विक्रमादित्य ने बुरी तरह से हराकर अपने पराक्रम का परिचय दिया था।

इसके बाद विक्रमादित्य ने अनेक राज्यों को जीतकर अपनी राजधानी को पाटलीपुत्र से उज्जैन के लिए बदल डाला था। उनके शासन काल में उज्जैन बड़े-बड़े महलों और मंदिरों से अत्यंत शोभायमान था।

विक्रमादित्य के बारे में अनेक अद्भुत गाथाएँ प्रचार में हैं। उनमें एक प्रमुख गथा महाकवि कालिदास से संबंधित है। किसी एक राजकुमारी ने (विक्रमादित्य के परिवार की नहीं) यह शपथ कर ली कि तर्क शास्त्र में उसे हरानेवाले के साथ ही वह शादी करेगी। कई पंडित उसके साथ तर्क करके हार गये थे।

इस प्रकार राजकुमारी के द्वारा अपमानित पंड़ितों ने एक योजना बना कर एक परम मूर्ख के साथ उस का विवाह करना चाहा। उन्हें एक जगह ऐसा वज्र मूर्ख दिखाई दिया जो जिस डाल पर बैठा था, उसी को काट कर नीचे गिर गया। उस मूर्ख को वे पंडित राज महल में ले गये।

चिकनी–चुपड़ी बातें सुना कर उन पंडितों ने राजकुमारी के माता-पिता को विश्वास दिलाया कि वह मूर्ख एक महा पंडित है। आख़िर उनका विवाह हुआ। पर राजकुमारी को जब पता चला कि उसका पति एक महा मूर्ख है, तब उसने अपने पति को राज महल से भगा दिया।

इस तरह अपमानित हुआ वह मूर्ख पति कालीमाता के एक मंदिर में गया और भक्ति तथा श्रद्धा के साथ देवी की प्रार्थना की। पर देवी प्रत्यक्ष नहीं हुई। इस पर अपनी जिंदगी से विरक्त होकर उसने समीप के एक कुएँ में कूद कर अपनी आत्म हत्या करनी चाही।
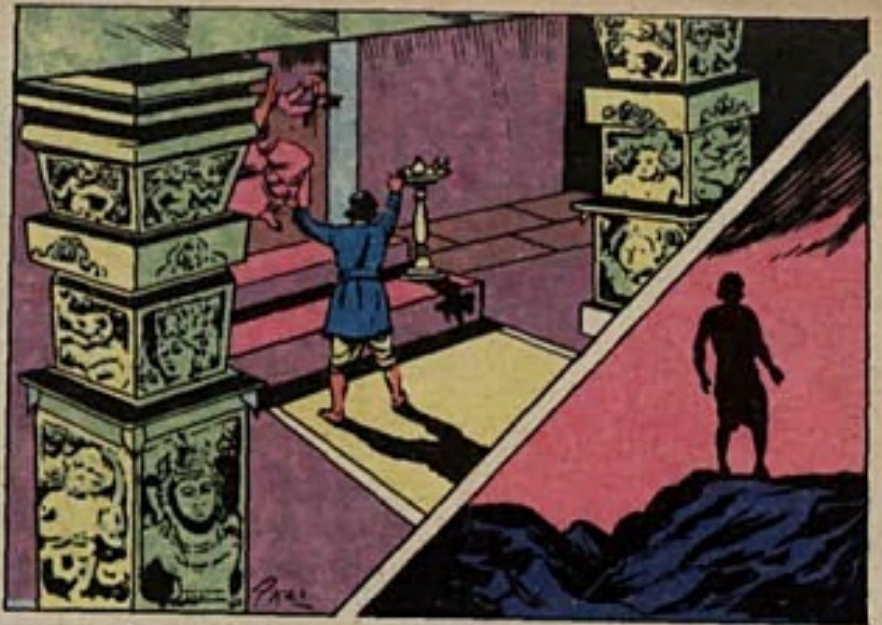
इसके दूसरे ही क्षण कालीमाता ने सरस्वती के रूप में प्रत्यक्ष होकर कहा–"बेटा, तुम्हारे सात जन्मों तक तुम्हें पंडित होने का प्रारब्ध नहीं है।" ये बातें सुनकर वह मूर्ख फिर निराश हुआ और नदी में कूद कर जान देनी चाही।

दयामयी देवी ने उस पर अनुग्रह करके उसे ऐसा आशीर्वाद दिया जिस से वह वहीं पर लगातार सात जन्म धारण कर के अपना देह-त्याग करे।

इस तरह देवी के अनुग्रह से वह एक उद्दण्ड पंडित बना। देवी की स्तुति करते एक श्लोक पढ़ा और अपना नाम कालिदास के रूप में बदल लिया। तब वह विक्रमादित्य के दरबार में पहुँचा।

इसके बाद विक्रमादित्य के दरबारी नव रत्नों में कालिदास भी एक पंडित बना। अन्य पंडितों के नाम हैं– धन्वंतरी, क्षपणक, अमरसिंह, शंखु, बेताळ भट्ट, घट कर्पक, वराह मिश्र और वररुचि।
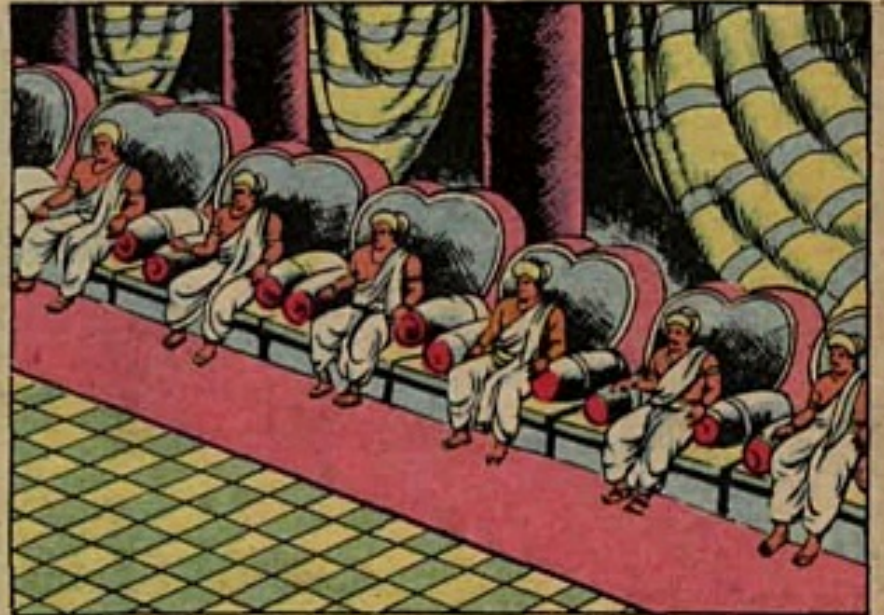
एक बार विक्रमादित्य किसी कारण से कालिदास पर कुपित हुए और उनको रामगिरि के पर्वतों में जाकर बसने का आदेश दिया। ऐसी एक कथा है। वहीं पर कालिदास ने अपने सुप्रसिद्ध "मेघ संदेश" काव्य लिखा। इसके बाद राजा कालिदास की मैत्री को भूल नहीं पाये और उन्हें वापस बुलवाकर उनका अपूर्व सम्मान किया।

झूठ क्या है?

एक राजा विनोद प्रिय थे। इसलिए उनके दरबार में विदूषक को बड़ी इज्जत होती थी। इस वजह से दरबारी पंडितरामशर्मा मन ही मन विदूषक पर जलते थे। रामशर्मा की समझ में न आया कि पांडित्य का नाम तक न जाननेवाली विदूषक को राजा क्यों ज्यादा मानते हैं?

एक दिन राजा सब से बड़ा झूठ बोलनेवाले दरबारी को इनाम देने की घोषणा की और झूठ का निर्णय करने का काम विदूषक को सौंप दिया।

सभी दरबारी अपने अपने ढंग से झूठ बोले। कुछ लोगों ने कहा कि उन्होंने सफ़ेद कौए देखे हैं। कुछ लोग बोले कि उन्होंने उड़नेवाले मनुष्यों को देखा है। सब के झूठ सुनते मुँह बनाये बैठे हुए रामशर्मा को देख विदूषक ने पूछा–"महाकविजी, आप भी इस स्पर्धा में भाग ले तो क्या ही अच्छा होगा?"

रामशर्मा खीझकर बोले–"झूठ बोलना हमारे वंश में कोई जानता तक नहीं है। आख़िर यह भी नहीं जानते कि झूठ क्या होता है?"

विदूषक ने राजा की ओर मुड़कर कहा–"महाराज, आप यह इनाम कृपया रामशर्माजी को दिलाइये।"

फिर क्या था, सभी दरबारी ठहाके मारकर हँस पड़े।

फिटकरी-मिश्री

अच्युत को एक कस्बे में नौकरी लगी।

उसने किराये पर एक घर लिया। घर से दफ़्तर जानेवाले रास्ते में एक छोटा-सा खपरैलवाला मकान था। उस मकान के चबूतरे पर पचास साल की एक औरत बैठी रहती। वह रोज अच्युत की ओर स्नेहभाव से देखा करती थी।

एक दिन शाम को वह औरत मंदिर से घर लौट रही थी। रास्ते में अच्युत को देख बोली–"बेटा, यह लो मिश्री! भगवान का प्रसाद है। आँखों से लगाकर खा लो!" यों कहकर उसने मिश्री का एक टुकड़ा अच्युत के हाथ दिया।

अच्युत ने मिश्री का टुकड़ा मुँह में डाल लिया। इसके बाद अधेड़ उम्र की वह औरत बोली–"बेटा, तुम्हें देखने पर मुझे अपने छोटे भाई की याद आ जाती है। वह पड़ोसी गाँव का पटवारी है। लेकिन उसके साथ मेरी नहीं बनती। मैं तो उस पर जान देती हूँ।" यों कहते वह आँखों में आँसू भरने लगी।

उस औरत का नाम विमलाबाई है। उसने अपनी विपदा सुनाई–पांच साल पहले उसका पति मर चुका था। उसके कोई संतान न थी। सिर्फ़ एक छोटा भाई है! पति के मरने पर उसने अपने छोटे भाई के घर चाकरी की। मगर उसके छोटे भाई की पत्नी ने उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया, उल्टे विमला के प्रति बराबर झूठी शिकायतें करती रही। उन बातों पर विश्वास करके उसका भाई विमला को पीटने के लिए तैयार हो जाता था। इन सारी यातनाओं को सहते वह अपने भाई के घर पड़ी रही। दो साल पहले छोटे भाई ने उसे अपने घर से निकाल दिया, तब वह इस गाँव में आ गई।

रघुनाथ शास्त्री

विमला ने अच्युत को अपनी राम-कहानी सुनाकर कहा–"बेटा, मैं इस एकाकी ज़िंदगी से ऊब चुकी हूं। मुझे हद से ज्यादा सताने पर भी मैं अपने भाई को भूल नहीं पाती हूं! तुम जब-तब मेरे घर आकर बातचीत किया करो, जिससे मैं अपने दुख को भूल पाऊँगी!" यों कहकर उसने अपने आंसू पोंछ लिये।

अच्युत को विमला की हालत पर दया आई। उसने कहा–"अच्छी बात है, दीदी! मैं ज़रूर आया करूंगा।"

यह जवाब सुनकर विमला फूली न समाई। उसी वक़्त रसोई बनाई, गिड़-गिड़ाकर खाना खिलाया, उस दिन से अच्युत बराबर विमला के घर जाया करता था। वह भी अच्युत के घर चली आती, उसके दफ़्तर जाने के बाद घर साफ़ करती, कपड़े धोती और रात का खाना बनाती थी।

एक दिन रात को अच्युत के घर के किवाड़ पर किसी ने दस्तक दी। अच्युत ने जाकर किवाड़ खोला तो देखता क्या है, विमला थर-थर कांपते बाहर खड़ी हुई है।

"दीदी, बात क्या है? डरती क्यों हो?" यों कहते वह घर के अन्दर चला आया।

विमला भी घर के अन्दर आ गई। सारी घटना कह सुनाई–"रात को मेरी आंख लगी थी, बस, पिछवाड़े में कोई आहट हुई। मैंने खिड़की में से बाहर देखा। पिछवाड़े के पौधे चरते एक भैंस मुझे दिखाई दी। मैंने किवाड़ खोला, भैंस को हांककर लौट आई और किवाड़ बंद करने को हुई, तभी अपने हाथ में छुरी लिये एक काला व्यक्ति धमकी देते हुए बोला–"बिना चिल्लाये अपने गले की सोने की माला और हाथ की चूड़ियां दे दो, चिल्लाओगी तो गला काट दूंगा।"

इतने में संयोग से गश्त लगानेवाला सिपाही उधर आ निकला। चोर दांत

मरने के बाद मेरी लाश का दहन-संस्कार करनेवाला भी कोई न रहेगा!" यों कहकर विमला ने अपनी माला और चूड़ियाँ उतारकर अच्युत के हाथ धर दीं।

एक हफ़्ते बाद विमला ने अच्युत से कहा–"बेटा, चोरों के डर से रात में मेरी नींद हराम होती जा रही है। मैं ये गहने अपने छोटे भाई के हाथ दे आती हूँ।"

अच्युत ने विमला के गहने लौटाने के ख्याल से संदूक़ खोल कर देखा, गहने गायब थे।

पीसते हुए बोला–"इस वक़्त तुम बच गई हो। तुम्हारे गहनों को छोड़ूँगा नहीं, देखती रह जाओ।" यह धमकी दे चोर भाग गया।

मैं एकदम डर गई। मेरी समझ में न आया कि क्या करूँ? मैं उस सिपाही के पीछे चुपचाप चलकर तुम्हारे घर पहुँची।"

"और सुनो, ये गहने मेरी माँ के हैं! मेरा छोटा भाई यह कहकर मुझे तंग करता है कि तुम विधवा के लिए ये गहने ही क्यों? मेरी पत्नी को दे दो, लेकिन मेरी रही-सही संपत्ति ये ही गहने हैं न! मैं अभी ये गहने दे दूँ तो मेरे

गहने न पाकर विमला रो पड़ी और बोली–"उस बदमाश चोर ने जो कुछ कहा, करके दिखाया। ये गहने तीन हज़ार रुपयों की कीमत के हैं। मेरे छोटे भाई को यह खबर मालूम होगी तो वह मेरी जान ले लेगा। उसके सर यह पाप क्यों लगे, मैं इस बीच किसी कुएँ में कूदकर अपनी जान दे दूँगी।" यों कहते वह अपने घर चली गई।

अच्युत की समझ में न आया कि क्या करे। उसके पास इतनी रक़म कहाँ?

यों विचार कर अच्युत उसी वक़्त विमला के छोटे भाई के घर पहूँचा और उसने सारी बातें विमला के छोटे भाई को सुनाईं और बिनती के स्वर में कहा–"भाई

साहब, मेरी असावधानी से ही ये गहने खो गये हैं। आप कृपया अपनी बहन पर नाराज मत हो जाइयेगा। मैं किश्तों में यह धन चुकाऊँगा।"

पटवारी सारी बातें सुन खिल-खिलाकर हँस पड़ा और बोला—"मेरी दीदी की उम्र के बढ़ने के साथ उसकी बुद्धि का विकास होता जा रहा है। आप तो उसकी असलियत से परिचित नहीं हैं।" इन शब्दों के साथ उसने विमला के बारे में कहा—

विमला बचपन से ही चोरी करने की आदत रखती है। अपने पति के मरने पर उसने मेरे घर दो साल रहकर हमें तंग किया। घर की चीजें चुराती थीं। खाने-पीने के लिए खरीदी गई चीज़ों को बेच डालती थी। बच्चों को बुरी तरह से पीट देती। हम पति-पत्नी के बीच झगड़े पैदा करती थी। मैं कुछ दिन तक सहता गया। मगर वह अड़ोस-पड़ोस के घरों में भी जाकर चोरी करने लगी। ऐसी हालत में मैंने अपनी इज्ज़त बचाने के लिए उसे अपने घर से भेज दिया। मैं उसके खर्च के वास्ते हर महीने रुपये भेजा करता हूँ, फिर भी मेरी दीदी ने मेरे प्रति दुस्प्रचार प्रारंभ किया और दूसरों की सहानुभूति प्राप्त कर उन्हीं के साथ दगा कर रही है। उसका विचार है कि आप उस पर दया करके उसको तीन हज़ार रुपये दे देंगे। वह आप के घर अकसर आती-जाती रही, इस वज़ह से उसी ने ये गहने संदूक़ से हड़प लिया होगा। वास्तव में मेरी दीदी के पास सोने के गहने हैं ही नहीं। वे मुलम्मे चढ़ाये गये गहने होंगे। उसको हम दोनों कोई अच्छा सबक़ सिखलायेंगे। आप एक काम कीजिए।" इन शब्दों के साथ विमला के भाई ने अच्चुत को अपनी योजना सुनाई।

अच्युत के घर लौटते ही विमला ने बड़ी व्यग्रता के साथ पूछा—"भाई साहब, क्या गहने मिल गये?"

"दीदी, मैं आप के छोटे भाई के गाँव हो आ रहा हूँ। आप के भाई ने कहा कि गहनों का दाम तीन हज़ार नहीं, बल्कि पाँच हज़ार है। मैं लाचार होकर आप के भाई के हाथ पाँच हज़ार देकर लौट रहा हूँ।" अच्युत ने कहा।

विमला अच्युत के मुँह से ये बातें सुन अवाक् रह गई और उसी वक़्त अपने भाई के गाँव पहुँची, डांटकर बोली–"अरे दुष्ट! उन नक़ली गहनों की क़ीमत पाँच हज़ार है? मेरे हाथ जो रुपये पड़ने थे, उन्हें तुम गीध की तरह उड़ा ले जा रहे हो? इसी वक़्त मुझे पाँच हज़ार रुपये दे दो, वरना मैं तुम्हें छोड़ूंगी नहीं।"

"ओह, दीदी! घर पहुँचते ही तुम मुझे शाप देने लगी हो? हाँ, तुम मुझसे बड़ी हो, इसलिए तुम्हें मुझे डांटने का हक़ है। लेकिन एक बात! तुम इस उम्र में धन के लोभ में पड़कर धोखा-दगा देने पर तुल गई हो, तो तुम मरने पर शैतान बन जाओगी। भगवान का नाम लेते हुए मजे से हमारे ही घर रह जाओ।" विमला के छोटे भाई ने समझाया।

विमला के पीछे ही बैल गाड़ी में पहुँचकर अच्युत ने सारी बातें सुनीं और विमला से कहा–"मैंने आप को दीदी पुकारा, इस बात पर मैं शर्मिंदा हूँ। आप ने मुझे विश्वास दिलाकर मेरे साथ कैसे दगा किया?"

अच्युत के मुँह से ये बातें सुनते ही विमला का सर शर्म के मारे झुक गया।

विमला का छोटा भाई पटवारी है। उसने अच्युत से कहा–"भाई, तुम तो जवान हो, फिर भी इस अनुभव के द्वारा तुम्हें थोड़ा व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करना होगा। फिटकरी और मिश्री देखने में दोनों एक समान होते हैं। पर उन्हें परखे बिना मुँह में डाल ले तो मुँह कड़ुआ हो जाएगा। मनुष्यों में भी ऐसे फिटकरी व मिश्री जैसे लोग होते हैं। तुम्हें उनके गुणों को परखकर व्यवहार करना होगा।"

जमीन्दार–भैंसा

एक कंजूस जमीन्दार के घर के सामने जाकर भूख से तड़पनेवाले एक भिखारी ने भीख माँगी। जमीन्दार ने उस भिखारी को अपने नौकरों के द्वारा गर्दन पकड़वाकर निकलवा दिया। इस पर गुस्से में आकर भिखारी ने पूछा–"क्या तुम्हारे जमीन्दार कोई आदमी है या भैंसा?"

जमीन्दार ने गुस्से में आकर अदालत में उस पर फ़रियाद की। न्यायाधिकारी ने याचक को बुलवाकर पूछा–"क्या तुमने जमीन्दार को भैंसा कहकर गाली दी?"

याचक ने अपनी गलती मान ली। इस पर न्यायाधिकारी ने याचक को दस दिन जेलखाने की सजा सुनाई।

याचक ने न्यायाधिकारी से पूछा–"महानुभाव, आप ने जमीन्दार को भैंसा बताना अपराध कहा, तब क्या मैं भैंसे को जमीन्दार कहकर पुकारूँ, तो आप को कोई आपत्ति है?"

"मुझे कोई आपत्ति नहीं है।" न्यायाधिकारी ने कहा।

"तब तो मैं चलता हूँ, जमीन्दार साहब।" याचक ने सिपाहियों के साथ चलते हुए जमीन्दार से कहा।

दो दगाबाजिन

हारून अल रशीद जिन दिनों में बगदाद के खलीफ़ा थे, उस जमाने में उनके राज्य भर में कबूतरों की डाक चलती थी। उस डाक को चलानेवाला एक योग्य व्यक्ति था। खलीफ़ा उसको एक हज़ार रुपये माहवार तनख्वाह देते थे।

कुछ साल बाद वह आदमी मर गया। कबूतरों की डाक भी बंद हो गई। वह डाक चलाने के वास्ते खलीफ़ा ने चालीस नीग्रो गुलाम, चालीस शिकारी कुत्ते और कुछ कबूतरों को दिया था, उन्हें खलीफ़ा ने वापस मँगवा लिया।

कबूतरों की डाक चलानेवाले अधिकारी के दिलैला नामक बीबी और जीनाब नामक बेटी थी। दिलैला ने खलीफ़ा के पास अर्जी भेज दी कि वह भी कबूतरों की डांक चलाने की क़ाबिलियत रखती है, इसलिए उसके शौहर का काम उसे दिलाया जाये और वही तनख्वाह उसे भी दी जाय। लेकिन खलीफ़ा ने उसकी अर्जी नामंजूर कर दी।

इस घटना के थोड़े दिन बाद खलीफ़ा ने दो मशहूर डाकू अहमद और हसन को कोत्वाल के पद पर नियुक्त किया। उन्हें पकड़ने के लिए खलीफ़ा ने काफी कोशिश की और उसमें नाक़ामयाब हुए। खलीफ़ा ने सोचा कि चोरी करने में क़ाबिलियत रखनेवालों को कोत्वाल के पद पर नियुक्त करने से चोरों को आसानी से पकड़ा जा सकता है। जब दिलैला को मालूम हुआ कि खलीफ़ा ने तो उसकी अर्जी नामंजूर की और डाकुओं को तो ऊँचे ओहदे दिये। इस पर वह गुस्से में आ गई। उसने अपनी बेटी जीनाब से कहा–" इस देश में डाकुओं और दगाखोरों को ऊँचे ओहदे दिये जाते हैं और उनकी बड़ी इज्ज़त

होती है, तो क्या हम्हीं नालायक़ ठहरें? देखती रह जाओ! में यह साबित कर दिखाऊँगी कि अहमद और हसन मेरे सामने किस खेत के मूली हैं!"

दर असल दिलैला उम्र में बूढ़ी थी, मगर युक्ति और चालाकी में बड़ी निपुण थी। उसकी बेटी जीनाब भी अपनी माँ से किसी बात में कम न थी। वह अपनी माँ की यह क़सम सुनकर बड़ी खुश हुई।

दिलैला ने अपने दिल में इरादा किया कि अपनी चालाकी से बगदाद शहर को थर्रा देना है। उसने एक दिन अपने गले में जपमालाएँ डाल लीं, मुँह पर नक़ाब डाल लिया, हाथ में सूफ़ी फकीरों का सा झंडा लिया और सूफ़ी सन्यासिनी के वेष में घर से चल पड़ी।

बगदाद के बड़े लोगों में से मुस्तफ़ा एक था। वह खलीफा के रक्षक-दल का अधिकारी था। उसे बड़ी मोटी रक़म तनख्वाह के तौर पर मिल जाती थी। उसका एक अलीशान मकान था, जिसमें चंदन की लकड़ी के किवाड़ और चांदी के ताले लगे थे। उसकी बीबी बड़ी खूबसूरत थी। उम्र में छोटी थी। उसका नाम खातून था। मुस्तफ़ा अपनी बीबी को अपनी जान से ज्यादा प्यार करता था। यही वजह थी कि उसके जरिये कोई संतान न पैदा होने पर भी मुस्तफ़ा ने दूसरी शादी नहीं की थी।

खातून भी संतान न होने की वजह से चिंतित थी। वह यह भी जानती थी कि उसका शौहर संतान के वास्ते तड़पता रहता है। इस ख्याल से खातून ने संतान पाने के लिए कई दवाइयाँ लीं, जादू-टोने कराये, मगर कोई फ़ायदा न रहा।

दिलैला सूफ़ी सन्यासिनी के भेष में 'अल्लाह' का नाम लेते शहर की गलियों में चक्कर लगाती थी। उसने मुस्तफ़ा के मकान के पास पहुँचने पर सर उठाकर देखा, महल की खिड़की के पास क़ीमती गहने पहने खातून खड़ी थी। वह

"तुम्हारी समस्या कोई बड़ी समस्या नहीं है। इस शहर में ही संतान देनेवाला एक फकीर है। तुम एक बार उनके दर्शन कर लोगी तो तुम्हारी इच्छा की पूर्ति हो जाएगी।" दिलैला ने कहा।

खातून ने कहा–"मैं आज तक कभी इस देहली को पार कर बाहर नहीं गई।"

"तुम मेरे साथ चलो। मैं तुम को उस फकीर के पास ले जाऊँगी। तुम्हारे खाविंद के घर लौटने के पहले ही तुम घर लौट सकती हो।" दिलैला ने समझाया।

खातून यह सोचकर बड़ी खुश हुई कि उसकी इच्छा फकीर के दर्शन करने पर जरूर पूरी होगी। उसने अपने बाक़ी सारे गहने पहन लिये और दिलैला के साथ चल पड़ी।

थोड़ी दूर चलने पर सिद्दी मोहसिन की दूकान आई। वह एक नौजवान था, अभी उसकी शादी न हुई थी। उसे देखते ही दिलैला के दिल में कोई ख्याल आया। उसने खातून को बाहर एक चबूतरे पर बिठाया और वह दूकान के अन्दर चली गई।

दिलैला ने मोहसिन को समझाया–"देखो बेटा, बाहर चबूतरे पर बैठी वह खूबसूरत जवान औरत मेरी बेटी है। तुम जैसे अच्छे चाल-चलनवाले जवान के साथ मैं अपनी बेटी को ब्याहना चाहती हूँ।

एक नवेली दुल्हन जैसी लगती थी। "उस जवान औरत को ले जाकर उसके सारे गहने हड़प न लूँ तो मेरी अक़्लमंदी किस काम की?" दिलैला ने अपने दिल में सोचा।

दिलैला को देखने पर खातून के दिल में भी यह आशा जगी कि शायद वह सूफी सन्यासिनी उसे संतान पाने की कोई तरक़ीब बतला दे। तुरंत उसने सन्यानिनी को बुलवा लाने को अपनी एक दासी को भेजा।

दिलैला ज्यों ही महल पर आई, त्यों ही उसके पैरों पर गिरकर खातून ने अपनी चिंता प्रकट की।

उसके बाप ने व्यापार करके खूब धन कमाया है। मैं तुम्हें मुंह माँगा दहेज दूंगी; ऐसी दो और दूकानें खोल सकते हो।"

मोहसिन बड़ा खुश हुआ और उसने पूछा–"अच्छी बात है! बताओ, मेरी शादी कब करोगी?"

"मेरे साथ चलोगे तो अभी शादी क़ायम कर सकते हो।" दिलैला ने कहा। इस पर मोहसिन एक हजार दीनारों की थैली लिये दिलैला के पीछे चल पड़ा।

इसके बाद दिलैला खातून और मोहसिन को साथ ले आगे बढ़ी, तो उसे रंगसाज हज मुहम्मद की दूकान दिखाई पड़ी। दिलैला ने अपने साथ चलनेवाले खातून और मोहसिन को बाहर खड़ा किया। वह अंदर जाकर मुहम्मद से बोली–"भाई, सुनो! बाहर जो खड़े हैं, वे मेरी बेटी और बेटा हैं। मेरा मकान गिरने की हालत में है। इसलिए उसकी मरम्मत करवा रही हूँ। इसलिए तुम्हारे जान-पहचानवाले का कोई मकान खाली हो तो हमें दिला दो।"

मुहम्मद ने थोड़ा सोचकर कहा–"मेरे मकान का ऊपरी हिस्सा इस वक़्त खाली पड़ा हुआ है। चार-पाँच दिन के लिए तुम लोग चाहो तो उसमें रह सकते हो।" यह कहकर मोहम्मद ने चाभी दे दी।

दिलैला खातून और मोहसिन को लेकर हज मोहम्मद के घर पहुँची। नीचे का एक कमरा खोलकर मोहसिन को इशारा किया कि वह अन्दर चला जाय, इसके बाद खातून को लेकर मकान के ऊपरी हिस्से में ले गई और समझाया–"बेटी, वह फकीर इसी मकान के निचले तल्ले में रहते हैं, मैं अभी जाकर उनसे मिल आती हूँ। इस बीच तुम अपने सारे गहने उतारकर हिफ़ाजत से एक कपड़े में बांध दो और फकीर साहब के दर्शन के लिए तैयार हो जाओ। उनके आगे गहने पहनकर जाना महज अपराध है।" ये बातें कहकर दिलैला नीचे उतर आई। दिलैला को

देखते ही मोहसिन ने पूछा–"क्यों माईजी, क्या शादी की बातें तै कर लें?"

दिलैला ने रोनी सूरत बनाकर कहा–"बेटा, किसी कमबख्त ने तुम्हें कोढ़ की बीमारी बताकर उसका दिल तोड़ दिया है। वह तुम से शादी करने से इनकार करती है, इसलिए तुम अपना कुर्ता उतारकर बैठ जाओ। मैं अपनी बेटी को लाकर दिखा दूंगी। तुम थैली मेरे हाथ दे दो, मैं ऊपर हिफ़ाजत के साथ रख दूंगी।"

मोहसिन ने दिलैला की बातों पर यक़ीन किया और एक हजार दीनारों से भरी थैली और उसका कुर्ता भी दिलैला के हाथ में दे दिया। उन्हें लेकर दिलैला ऊपर के कमरे में पहुंची और खातून से बोली–"सुनो बेटी, फकीर साहब तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं। समझ लो कि तुम्हारी क़िस्मत खुल गई है। तुम नीचे चली जाओ। मैं तुम्हारे गहनों की पोटली छिपाकर अभी चली आती हूं।" खातून नीचे उतरकर कमरे के अंदर चली गई। उसके पीछे दोनों पोटलियां लिये दिलैला भी नीचे उतर आई और सीधे गली में घुस गई। खातून ने कमरे के अन्दर फकीर की जगह मोहसिन को पाया। उसने खातून से कहा–"लो, तुम ठीक से देख लो। कहीं मेरे बदन पर कोढ़ के दाग हैं?"

खातून घबरा गई। वह झट ऊपर के कमरे की ओर दौड़ गई। मगर न वहां पर सूफ़ी सन्यासिनी थी और न उसके गहनों की पोटली ही थी।

इस बीच दिलैला ने उन पोटलियों को अपने जान-पहचान के एक दूकानदार की दूकान में रख दिया, तब हज मुहम्मद की दूकान में जाकर बोली–"भाई साहब तुम्हारा मकान बड़ा अच्छा है। तुमने हमारा बड़ा उपकार किया है। मेरे बच्चे भूखे हैं, क्या आप उनके खाने के वास्ते कुछ लेते जायेंगे? मैं अपना सामान ले आने घर जाती हूं। लो, तुम एक दीनार ले लो। उनके साथ नाश्ता कर लो।" दिलैला बोली। (और है)

विघ्नेश्वर

सत्यलोक में कमल के आसन पर बैठकर ब्रह्मा दिन भर सृष्टि करके थक गये और कल्प का अंत समीप आते ही उन्हें निद्रा के नशे ने घेर लिया। निद्रा की खुमारी में जब भी वे जंभाइयाँ लेते, तब-तब पहाड़ों की चोटियाँ चटककर आग के शोलों को छितराने लगीं। निद्रा के समय ब्रह्मा की आँखें जब गीली हो जातीं तब असमान में प्रलय कालीन मेघ हाथी की सूंड़ों जैसी धाराओं के रूप बरसकर सारी दुनिया को जलमय करने लगे। उनकी पलकें जब भारी हो गईं तब सारी दिशाओं में अंधकार छा गया।

उस प्रलय कालीन स्थिति मे ब्रह्मदेव सो गये। प्रलय उनके लिए रात का समय है। पुनः नये कल्प के आरंभ का समय निकट आया है। नये जगत पर जब प्रकाश फैलने का समय आया, तब सरस्वती देवी वीणा हाथ में लेकर भूपाल राग का आलाप करने लगी। तब जाकर ब्रह्मा की नींद खुली।

ब्रह्मदेव ने पद्मासन लगाकर अपने चार मुखों से दसों दिशाओं में परखकर देखा।

नीचे का सारा जगत जलमय हो पर्वतों के समान लहरों से कल्लोलित है। उन लहरों के बीच एक जगह एक सफ़ेद प्रकाश की किरण दिखई दी। उस प्रकाश में लहरों पर तिरते एक बड़ा वट पत्र, उस पर चन्दामामा जैसा एक शिशु लेटकर अपने दायें पैर का अंगूठा चुबलाते दिखाई दिया।

१. वट पत्र बाल गणपति

ब्रह्मा ने हाथ जोड़कर आँखें मूंदे ध्यान किया। आँखें खोलने पर उन्हें एक विचित्र दृश्य दिखाई दिया।

ब्रह्मा अनुभव पूर्वक जान गये कि वह शिशु कोई और नहीं, बल्कि विश्व विराट स्वरूपी परब्रह्म हैं। लेकिन अब उस शिशु का सर हाथी के सिर के समान है और अपनी छोटी-सी सूंड से दाये पैर को पकड़कर मुंह में रखते जैसे दीख रहा है।

शिशु का मुख प्रसन्न था और वह चन्द्रमा की कांति से प्रकाशमान था। उसके चार हाथ थे, ब्रह्मा आश्चर्य में आकर उस शिशु की ओर देख ही रहे थे कि अचानक वह दूसरे ही पल में पत्ते के साथ अदृश्य हो गया और उस प्रदेश में मिट्टी का एक टीला मात्र दिखाई दिया।

धीरे धीरे जल में से विशाल भूभाग और समुद्र उत्पन्न हुए।

ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना करना प्रारभ किया। उन्होंने शुरू में पर्वत और नदियों के पैदा हो जाने का संकल्प किया और अपने कमंडलु से पानी लेकर जगत पर छिड़क दिया। इसके बाद वृक्ष, फसल और खनिजों का संकल्प किया। तदनंतर समुद्र में मछलियों, जमीन पर जानवरों और कृमि-कीट तथा पक्षियों की सृष्टि की। इसके बाद मनुष्यों की सृष्टि करने का संकल्प करके कमंडलु के जल को फिर छिड़क दिया।

उधर ब्रह्मा सृष्टि की रचना में डूबे हुए थे, इधर सरस्वती वीणा बजाने में लगी थीं। न मालूम क्यों, अप्रयत्न ही वीणा में अपश्रुति निकल पड़ी। सरस्वती ने चकित होकर नीचे की ओर देखा और वे एकदम आश्चर्य में आ गईं। ब्रह्मा अपनी अर्द्धांगी के चकित होने का कारण समझ न पाये। उन्होंने अपने कमल के आसन पर से ही झुककर नीचे देखा।

पर्वत सब औंधे मुंह हो रहे हैं। उनकी तलहटियाँ पृथ्वी में घुसते हुए सूर्य के प्रकाश को रोकते हुए छत्रों की भांति बढ़

रही हैं। नदियाँ समुद्रों से निकलकर ऊँचे प्रदेशों को ओर बह रही हैं। वृक्ष भी उलट रहे हैं और उनकी जड़ें आसमान को छू रही हैं।

समुद्र की लहरों पर तिरते जलचर उछल-कूद कर रहे हैं। कुछ सीध में बढ़ रहे हैं। कुछ पक्षियों की भांति उड़ रहे हैं।

जानवर विकृत आकार में पैदा हुए। उनमें से कुछ जानवरों के सिर न थे, कुछ जानवरों के पिछली टांगें न थीं, कोई एक पैरवाला जानवर था, कोई तीन पैरोंवाला था, कुछ के तो आँखें व कान थे, पर मुंह न थे। किसी जानवर की पूंछ में सर था, तो किसी के सर में पूंछ उगी थी। कुछ पक्षियों के पंख न थे, कुछ के पैर न थे, इसलिए वे लुढ़कते व लोटते थे।

ब्रह्मा ने घबराये हुए अपनी सर्वोत्तम सृष्टि मनुष्य की ओर व्यग्रता पूर्वक देखा।

कुछ मनुष्यों के दो सर थे, एक पुरुष का था, तो दूसरा नारी का।

पुरुष कोई वित्ते भर का था, तो कोई बालिश्त भर का। नारियाँ तो बड़े बड़े हाथियों तथा ताड़ के पेड़ों जैसी थीं। कुछ की पीठों पर सर चिपकाये जैसी थीं। किसी के चार पैर हैं तो किसी के दो, तीन या एक ही पैर था। कुछ लोगों के पेट पर बड़े बड़े मुंह लगे थे जो कबंधों जैसे रहकर आक्रंदन कर रहे थे। जानवर मुंह बायें दीनतापूर्वक चिल्ला रहे थे। गूंगा

वन ताक रहे थे। वे सब ऐसे खींचातानी करते, नाचते से लगते थे, मानो सृष्टिकर्ता ब्रह्मा की निंदा कर रहे हो।

एक बालिश्त भर का आदमी ताड़ के पेड़ जैसी विकृत आकृतिवाली नारी को दिखाकर आसमान की ओर देखते चीख रहा था–"हे ब्रह्मदेव! इस तरह की नारी के साथ में कैसे अपनी गृहस्थी चला सकता हूँ?"

कुछ विकृत आकारवाले मनुष्य रोते हुए ब्रह्मा की निंदा कर रहे थे–"हे ब्रह्मदेव! आप तो चतुर्मुखी कहलाते है। आप चार मुखों के रखते हुए ऐसे लगते हैं कि आप का कोई वास्तविक सिर ही नहीं है, याने दिमाग नहीं है। वरना आप हम को इस रूप में क्यों पैदा करते?"

ये सब चीख-चिल्लाहटें और आक्रंदन देख सचमुच ही ब्रह्मा के चारों सिर चकरा गये। उनकी आठों आँखों के सामने अंधेरा छा गया। चकित हो ब्रह्मा ने सरस्वती की ओर असमंजस भरी दृष्टि दौड़ाई। उनके चारों सरों को सफ़ेद बने देखकर सरस्वती मुस्कुरा उठीं और मौन रह गईं।

ब्रह्मा स्वगत में सोचते हुए आखिर जोर से चिल्ला उठे–"मेरी सृष्टि का यह हाल क्यों हुआ है? मैंने तो सही ढंग से सृष्टि करने का संकल्प करके ही इस जगत के निर्माण की योजना बनाई है। आखिर ऐसा क्यों हो गया है?" ब्रह्मा की यह आवाज़ दसों दिशाओं में गूंज उठी। असमंजस भरी चकित दृष्टि दौड़ानेवाले ब्रह्मा को एक अपूर्व प्रकाश दिखाई दिया। उस प्रकाश में उन्हें एक अद्‌भुत मूर्ति दिखाई दी। उस मूर्ति के हाथी का सिर है। उसके चार हाथ हैं। वे चारों हाथ क्रमशः पाश, अंकुश, कलश और परशु धारण किये हुए हैं। वह पूर्ण चन्द्रमा की भांति प्रकाशमान है। उसकी सफ़ेद शाल सारे आसमान में फड़-फड़ा रही है। उस वक़्त सरस्वती ने अपनी

वीणा में ओंकार नाद किया। सरस्वती देवी की उंगलियाँ अपने आप वीणा पर नाद नामक्रिया का राग ध्वनित करते माया माळव गौळ राग आलापित करने लगीं, फिर वह राग हंसध्वनि राग में अपने आप बदल गया। गजानन की आकृति में साक्षात्कार हुए मूर्ति ने वट पत्र पर खड़े हो ब्रह्मा को अभय मुद्रा में आशीर्वाद दिया। उनके चारों तरफ़ शरत्कालीन पूर्णिमा के दिन की चांदनी जैसी रोशनी फैली हुई थी।

ब्रह्मा ने अप्रयत्न ही हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए पूछा—"हे महानुभाव! आप अद्भुत मूर्ति कौन हैं? मैं एक ऐसा अज्ञानी हूँ कि आप को समझ नहीं पा रहा हूँ। इसलिए मुझ पर अनुग्रह कीजिए।"

"वत्स, ब्रह्मदेव! संकल्प के पीछे सदा विकल्प भी दौड़ा करता है। उसी को विघ्न कहते हैं। विघ्न को रोककर संकल्प की पूर्ति करानेवाला मैं विघ्नेश्वर हूँ। विघ्नों का नेतृत्व करनेवाले विकल्प को मैं अपनी कुल्हाड़ी द्वारा भेद देता हूँ और प्रत्येक कार्य को पूर्ण कलश की तरह सफल बनानेवाला विघ्न विनायक हूँ। पंच भूत कहलानेवाले पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश रूपी भूत गणों का अधिपति बना हुआ मैं गणपति हूँ। खाद्य पदार्थों तथा फसलों को नष्ट करनेवाले मत्त हाथी जैसे विघ्नों को मैं अपने तेज अंकुश से क़ाबू में रखता हूँ और उन्हें मेरे पाश नामक मजबूत रस्से से बांध देता हूँ। इसलिए आप मुझे भविष्य में विघ्नेश्वर पुकारा कीजिए।" यों विघ्नेश्वर ने गंभीर स्वर में समझाया।

इस पर ब्रह्मा ने कहा—"हे देव! हे विघ्नेश्वर! मेरी सृजन शक्ति में क्यों इस प्रकार भयंकर विघ्न पैदा हुआ? कृपया आप मेरे द्वारा उत्तम सृष्टि करने लायक़ कोई मार्ग विस्तार पूर्वक समझाइये।"

"आप को विघ्न की जानकारी कराने

प्राणियों में हाथी सब से बड़ा है, उसी प्रकार बुद्धि-बल भी ज्ञान के क्षेत्र में बड़ा है। हाथी जैसे मेधा प्राप्त करना चाहिए, इसके संकेत के रूप में मैं गजानन की आकृति में हूं। आप जब सो रहे थे, तब सोमकासुर नामक राक्षस ने आप के चारों वेदों का अपहरण किया और उन्हें समुद्र तल में छिपा रखा है। महाविष्णु ने मत्स्य का अवतार धारण करके उस राक्षस का संहार किया और आप के वेद लाकर वट पत्र शायी बने मुझे सौंप गये हैं। लीजिए, इनको फिर से ग्रहण कर आप अपनी सृष्टि का कार्य निर्विघ्न संपन्न कीजिए।" यों समझाकर विघ्नेश्वर ने ब्रह्मा के हाथ वेद सौंप दिये।

ब्रह्मा वेदों को ग्रहण कर परम प्रसन्न हुए। विघ्नेश्वर की स्तुति करने लगे–"हे विघ्नेश्वर! मेरे द्वारा सृष्टि का संकल्प करने के पहले ही आप का ध्यान करके, हृदय पूर्वक आप की पूजा करके इसके बाद ही अपने कार्य में प्रवृत्त होने का वर प्रदान कीजिए। इस वक़्त मेरी सृष्टि जो बेढंग बनी हुई है, उसे वापस होने लायक़ वर दीजिए।"

इसके बाद विघ्नेश्वर के प्रभाव से पहले की वक्रतापूर्ण सृष्टि पल भर में गायब हो गई। इस पर विघ्नेश्वर ने

के लिए ही यह सब घटित हुआ है। वटपत्र पर बाल गणपति के रूप में मैंने ही आप को दर्शन दिये थे। उस वक़्त आप मेरे बारे में सोच नहीं पाये। मेरे बारे में सोचने का मतलब है कि विघ्न के संबंध में पहले ही सावधान रहनेवाला ज्ञान प्राप्त करना। मैं उसी ज्ञान का स्वरूप हूं। ब्रह्मा से लेकर बुद्धि रखनेवाले प्रत्येक प्राणी को अपना कार्य प्रारंभ करने के पूर्व विघ्न से बचने के लिए और कार्य की सफलता के लिए उचित सावधानी तथा ज्ञान-प्राप्ति का होना आवश्यक है। हाथी अपना क़दम आगे बढ़ाने के पहले जमीन की मजबूती को परख कर तब आगे बढ़ता है।

ब्रह्मा को पुनः समझाया–"हे ब्रह्मदेव! मैं वक्रता को तुंड-तुंडों के रूप में टुकड़े-टुकड़े करता हूँ। इसलिए मैं वक्रतुंड नामक अपने नाम को सार्थक बनाने के लिए अपनी सूंड को वक्र रखता हूँ। वक्रतुंड बने मेरा ध्यान करके जो भी कार्य शुरू किया जाता है, उसमें कोई वक्रता या ठेढापन नहीं होता। आप अपनी इच्छा के अनुरूप मेरा ध्यान करके सृष्टि की रचना प्रारंभ कर दीजिए। सृष्टि करना एक कला है। वह कला किसी भी प्रकार के ठेढेपन या वक्रता के बिना ही जगत आप के द्वारा रचित कला निलय बनकर शोभायमान रहेगा। आप ही के जैसे जगत के सभी प्राणियों की पहुँच में रहकर उनकी प्रथम पूजा पानेवाले विघ्नेश्वर के रूप में, समस्त विघ्नों से रक्षा करते हुए संकल्प-सिद्धि करानेवाले सिद्धि विनायक के रूप में, समस्त गणों के अधिपति के रूप में गणपति बनकर शिवजी और पार्वती के पुत्र के रूप में मैं अवतार लूँगा।" यों कहकर ब्रह्मा को आशीर्वाद दे वह मूर्ति अदृश्य हुई।

इस पर सरस्वती देवी ने हिंदोळ और श्रीराग के द्वारा मंगलदायक स्वरों को वीणा पर ध्वनित करके इस प्रकार सुनाया कि मानो आकाश भी पुलकित हो उठे।

ब्रह्मदेव ने "विघ्नेश्वराय नमः" कहते सृष्टि का उपक्रम किया। सृष्टि का कार्य पहले से भी कहीं अधिक सुंदर और निर्विघ्न चला। गंभीर व विशाल पर्वत-पंक्तियाँ, अमृत तुल्य जल से भरी नदियाँ, सुंदर वन, रंग-बिरंगी खिलौनों जैसे जानवर, शारीरिक और मानसिक दृष्टि से भी शक्तिशाली बने मानवों से यह सारा जगत ब्रह्मा के कला निलय के रूप में शोभायमान हो गया। वाग्देवी सरस्वती ने अपनी वाणी को संगीत के रूप में प्राणि मात्र को स्वर प्रदान किया। प्राणी समुदाय समस्त शुभ लक्षणों से विकास को प्राप्त हुआ। जटाओं को फैलानेवाले वट वृक्ष की भांति जगत का विकास हुआ।

पत्थर का चेहरा

सैंकड़ों साल पहले की बात है। अरावली पहाड़ों में एक पर एक पत्थर का चेहरा दिखाई देता था। वह ऐसा मालूम होता था कि उस पत्थर में किसी महा शिल्पी ने एक मनुष्य का चेहरा गढ़ा हो। वास्तव में किसी शिल्पी ने वह चेहरा गढ़ा न था। प्रकृति का ही रूप था वह। उस पहाड़ के चारों तरफ़ बसनेवाले ग्रामवासियों को प्रति दिन वह चेहरा दिखाई देता था। लोगों को उस चेहरे में सहज ही दया, करुणा, शांति आदि भाव दीखते थे। उस चेहरे का माथा विशाल था जो ज्ञान को सूचित करता था। उस चेहरे की आँखें ऐसी दीखती थीं मानो जनता की ओर दया और वात्सल्य भाव से देख रही हों।

पत्थर के उस चेहरे को लेकर जनता में कई कहानियाँ प्रचार में थीं। कुछ लोग कहा करते थे कि उस चेहरे की आकृतिवाला एक महानुभाव कभी वहाँ पर रहा करता था और उसकी कृपा से जनता बड़ी सुखी थी। इधर कुछ साल पहले उस प्रदेश में एक मुनि आ पहुँचे। आस-पास के गाँवों के सैकड़ों लोग उस मुनि को देखने गये। उनमें से कुछ लोगों ने मुनि से उस पत्थर के चेहरे के बारे में पूछा। मुनि ने थोड़ी देर तक उस चेहरे को देखकर कहा—"इसी आकृतिवाला एक मनुष्य कभी यहाँ पर दिखाई देगा। वह एक बड़ा ज्ञानी और महानुभाव होगा। उसके जरिये जनता का अनेक प्रकार से उपकार होगा।"

इसके बाद सैकड़ों साल गुजर गये। मुनि ने जो समाचार बताया था, उसे एक पीढ़ीवाले दूसरी पीढ़ी के लोगों को सुनाते गये। कई लोगों का उस वृत्तांत पर विश्वास भी जाता रहा।

२५ वर्ष पुरानी चन्दामामा की कहानी

लेकिन एक लड़का उस पर गहरा विश्वास करता था। उसका नाम वसु है। वसु जब छोटा लड़का था, उसे अपनी गोद में बिठाकर उसका दादा पत्थर का चेहरा उसे दिखाते हुए मुनि की बताई हुई बातें सुनाया करता था। कई साल तक ये बातें सुनने के बाद वसु के दिमाग में मुनि की बातें अच्छी तरह बैठ गईं। वसु के मन में यह विश्वास भी जम गया कि उसके देखते-देखते मुनि का यह ज्योतिष सच साबित होगा।

एक बार वसु के गाँव में एक महा ज्ञानी सन्यासी आये। लोगों ने बताया कि सन्यासी वेद, उपनिषद, तर्क और व्याकरण शास्त्रों के पारंगत विद्वान हैं। मगर उस सन्यासी के चेहरे और पत्थर के चेहरे में कोई समानता न थी। फिर भी वसु निराश नहीं हुआ। उसने बड़ी श्रद्धा के साथ सन्यासी की बातें सुनीं। इस बात में कोई शक न था कि सन्यासी की बातें ज्ञान से भरी हुई हैं। लेकिन वे जनता के जीवन और सुख-दुखों से बिलकुल अपरिचित थे। साधारण परिवार में पैदा होकर लोगों के सुख-दुखों से परिचित वसु ने यह बात जल्दी समझ ली।

अलावा इसके वे सन्यासी बड़े क्रोधी स्वभाव के थे। उनके प्रवचन के समय किसी को खांसना व छींकना मना है। ज्ञान से भरी उन बातों को सुनते वक़्त अगर गँवार लोगों के मन में कोई शक पैदा होता तो सवाल नहीं कर सकते थे। सन्यासी बस, यही कहा करते—"यह तो तुम्हारा दुर्भाग्य है। जो लोग समझने की क़ाबिलियत रखते हैं, वे लोग समझ लीजिए! वरना अपना मुंह बंद करके यहाँ से चलते बनिये।"

इस कारण धीरे-धीरे सन्यासी के प्रति लोगों की श्रद्धा और भक्ति जाती रही। थोड़े दिन बाद सन्यासी वहाँ से चले गये। अपनी आशा को निराश होते देख वसु बड़ा दुखी हुआ।

थोड़े दिन बाद उस प्रदेश में एक महान शौर्य और पराक्रम रखनेवाले एक योद्धा आ पहुँचे। वे कई युद्धों में विजयी हो चुके थे। कुछ लोगों ने बताया कि जहाँ पर ये वीर होंगे, वहाँ के लोग चैन की नींद सो सकते हैं और उन्हें दुश्मन का डर बना न रहेगा। वसु यह सोचकर उस योद्धा के पास गया कि शायद मुनि का बताया हुआ व्यक्ति वही होगा। लेकिन उस वीर का चेहरा पत्थरवाले चेहरे से मिलता-जुलता न था। साथ ही वह वीर जनता के सुख-दुखों से बिलकुल अपरिचित था। जो उसकी बात मानते न थे, उन्हें तंग किया करता था। इस कारण धीरे-धीरे उसके प्रति लोगों का आदर जाता रहा। थोड़े दिन बाद वह भी उस प्रदेश को छोड़ कहीं चला गया।

कुछ दिन और बीत गये। उस प्रदेश में एक बहुत बड़ा व्यापारी आया। उसने समुद्रों पर नौका-व्यापार करके करोड़ों रुपये कमा लिये थे। कहा जाता था कि वह जिस प्रदेश में दो दिन टिक जाता, वहाँ पर सुख-वैभव लहराने लगते हैं।

वसु जानता था कि उस प्रदेश के लोग मेहनती हैं और सुख-वैभव वहाँ पर नहीं के बराबर हैं। वसु यह सोचकर खुश हुआ कि उस व्यापारी का चेहरा पत्थर के चेहरे जैसा होगा और वह उन गाँववालों का उद्धार करने आ रहा है।

मगर व्यापारी के पास पहुँचकर वसु ने देखा कि उसका चेहरा पत्थर के चेहरे से बिलकुल भिन्न है, फिर भी उसे लगा कि व्यापारी के आने से उसके गाँवों की धन-दौलत बढ़ती जाएगी। व्यापारी ने वहाँ के खेतों में नई फसलें उगवाईं। वहाँ की पैदावर को उसने खुद ख़रीद लिया। किसानों को उन पुरानी फसलों की अपेक्षा इन नई फसलों से ज़्यादा फ़ायदा पहुँचा। सब के हाथों में धन बहने लगा। पेशेवर लोगों में भी नये पेशों को व्यापारी ने प्रोत्साहन दिया। लेकिन दो-तीन वर्ष

बाद व्यापारी ने नई फसलों के दर घटा दिये। वे फसलें और पेशेवर लोगों की बनाई हुई चीजें उन गाँववालों के लिए उपयोगी न थीं, इसलिए व्यापारी ने जो दर निश्चित किया, उसी दर पर किसानों को अपनी चीजें बेचनी पड़ीं। वरना उन्हें खरीदनेवाला कोई दूसरा व्यापारी न था।

अलावा इसके जनता के खाद्य पदार्थ और प्रति नित्य काम में लाई जानेवाली वस्तुओं का अभाव होने लगा। साथ ही उनके दाम बढ़ने लगे। जनता के जीवन में हलचल मच गई। इसके पहले जो लोग आराम से अपने दिन गुजारते थे, अब वे गरीब बन बैठे। अनाज और धन का भी अकाल और अभाव खटकने लगा। व्यापारी ने अपने लिए आवश्यक सारा माल बोरों में भरकर गाड़ियों पर लदवाया और चंपत हो गया। इसे देखने पर वसु का दुख उमड़ पड़ा। उसकी उम्र के साथ बुद्धि का भी विकास होने लगा था।

कुछ दिन और बीत गये। उस प्रदेश में एक महा कवि आया। वह कवि आम जनता के जीवन से परिचित था। आम जनता के बारे में उसने गीत लिखे। देश के कोने-कोने में उसके गीतों का प्रचार हुआ। उसे अपार यश भी मिला।

वसु ने सोचा—"इस महा कवि का चेहरा पत्थर के चेहरे से अवश्य मिलता-जुलता होगा। उस महा मुनि की वाणी व्यर्थ न होगी।"

आखिर कवि आ पहुँचा। उसके चेहरे में पत्थर के चेहरे की रूप-रेखाएँ न थीं। कवि ने गीत गाये, उसके गीत सुनकर सब लोग तन्मय हो उठे। उसे देवता से अधिक माना। उसकी सेवा-शुश्रूषा की। मगर जनता के प्रति कवि के मन में किसी प्रकार की सहानुभूति न थी।

कवि ने अपने गीतों में जनता के प्रयत्नों की सराहना की, मगर उन प्रयत्नों के प्रति उसके मन में किसी प्रकार का आदर नहीं है। वह सदा निकम्मे तथा

धनी लोगों के साथ रहा करता था। वसु ने सोचा–"यह कवि कपटी है। वह अपने गीतों द्वारा जनता को धोखा दे रहा है, इसलिए उसका चरित्र वास्तविक नहीं है। उसके गीत मिथ्या पूर्ण हैं। उनमें चाहे जितना भी यथार्थ क्यों न हो, क्या फ़ायदा?"

इसके बाद कवि के स्वभाव से जनता परिचित हो गई और जनता ने उसके प्रति आदर करना छोड दिया। थोड़े दिन बाद कवि भी कहीं चला गया।

वसु चिंतित हो पत्थर की आकृति को देखते खड़ा रहा। उसके दादा ने मुनि की जो बातें सुनाई थीं, उन बातों के प्रति वसु का विश्वास जाता रहा।

वसु के देखते कई महानुभाव आये, पर किसी के भी चेहरे में उस आकृति की उदारता, दया, करुणा और वात्सल्य के भाव दिखाई नहीं दिये। इसलिए कोई भी किसी प्रकार से जनता का उपकार न कर पाये। वसु यों विचार करते खड़ा रहा, तब उस रास्ते चलनेवाले कुछ लोग वहाँ पर आये। वसु के चेहरे की ओर देखकर तब उन लोगों ने उस पत्थर पर अंकित आकृति को देखा। आश्चर्य की बात थी! वसु का चेहरा शत प्रतिशत पत्थर क़े चेहरे ही जैसे था?

यह समाचार पल भर में चारों तरफ़ के गाँवों में फैल गया! जो लोग पत्थर के चेहरे के बारे में उनके पूर्वजों के मुँह से जो कहानियाँ सुन चुके थे और कालांतर में भूल गये थे, वे सब वसु के पास दौड़े-दौड़े आ पहुँचे और सर्व प्रथम उन दोनों चेहरों की समानताओं को देख आश्चर्य में आ गये।

मुनि के वचन सत्य प्रमाणित हुए। वसु ने अनेक महानुभावों के मुँह से जो बातें सीखी थीं, उन्हें जनता के हित के अनुरूप परिवर्तित कर दी, वह भी जनता के बीच एक बनकर उनके सुख-दुखों को बांटता रहा। उन्हें ऐश्वर्य के साथ आनंद भी प्रदानकर धन्य बन गया।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ अप्रैल १९८१ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

Devidas Kasbekar

★

Devidas Kasbekar

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों।

★ फ़रवरी १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।

★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

दिसंबर के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : **झगड़ने की सजा !**

द्वितीय फोटो : **देखने में आता मजा !!**

प्रेषिका : कु. अपर्णा सुधाकर डोंगरे, नेवालकर बाड़ा, ३५, पथ कुआँ, कोठी कुआ, झांसी-२

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 188, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

The stories, articles and designs contained herein are exclusive property of the Publishers and copying or adopting them in any manner will be dealt with according to law.

Walt Disney's WONDER WORLD

GIFT POSTER INSIDE

Hurry! For your copy

1981

ONLY Rs. 2/- A COPY

The Adventures of ZORRO — THE FOX

AND OTHER ENJOYABLE FEATURES...

A New Fortnightly

राम और श्याम

'असली निशाना'

रसीली
प्यारी
मज़ेदार

पॉपिन्स फलों की स्वादवाली गोलियां

५ फलों के स्वाद–
रासबेरी, अनानास, नींबू,
नारंगी व मोसंबी.

everest/80/PP/309-hn.